सो बूझे जिस आप बुझाए

भाग - न

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

निहकलंक : *ऐ धरनीए, जोती जोत सरूप हरि, जोती आत्मा जोत परमात्मा जो सर्ब आत्मा दा परमात्मा है और जोत सरूप है। सरीर नहीं तन नहीं वज़ुद नहीं माटी ख़ाक नहीं, और उसे परमात्मा नूं, जोत सरूप नूं, निहकलंक किहा गिआ है। किसे इन्सान नूं निहकलंक नहीं किहा गिआ।*

नानक सतिगुर कहि के गिआ महांबली उतरे अवतार, मात पित ना कोई बणाईआ। मुहम्मद कह के गिआ आए अमाम यार, यारी यारां नाल निभाईआ। ईसा कहे मेरा पिता फेरा मारे परवरदिगार, बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। मूसा कहे जिस दा जलवा तक्क के डिगा मूंह दे भार, अन्तम फड़ के बाहों लए उठाईआ। वेद व्यासा लिख के गिआ अपार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चा टिल्ला पर्बत दए सुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कहे मेरी किसे ना पाई सार, थोड़े थोड़े इशारे गिआ जणाईआ। कलिजुग अन्तम इक्क इकल्ला आवे आपणी वार, वारता सभ दी वेख वखाईआ। कागद कलम शाही ना लिखणहार, कातब रोवण ज़ारो ज़ार, तुआकब करे बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरी आदत दीन मज़हब ज़ात पात जुग चौकड़ी दित्ती वगाड़, मनमत कूड़ा राह चलाईआ । अग्गे इक्को इबादत दस्से हरि निरँकार, सख़ावत आपणी झोली पाईआ । उलफ़त करे सर्ब संसार, ग़फ़लत कोई रहण ना पाईआ। महिफ़ल ला के गुर अवतार, पीर पैगम्बर नग़मा नाम सुणाईआ। इक्को शमा होए उजिआर, दीपक दीआ डगमगाईआ। दूसर कोई ना करे निमस्कार, बिन पुरख अकाल सीस ना कोई झुकाईआ। वाअदा कीता गुर अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाईआ । भरमे भुल्ले ना कोई संसार, भरम भुलेखे विच्च हरि जू कदे ना आईआ। लिखयां पढ़यां एह करनी विचार, बिन लेखा लिखयां नज़र किसे ना आईआ। हरि का लेखा सदा लिखण पढ़न तों बाहर, अलफ़ ये हद्द ना कोई वंडाईआ। निक्की निक्की पीर

पैगम्बरां नाल करदा रिहा गुफ्तार, गुफ्त आपणा राह जणाईआ। जे कोई अगाँह हो के वेखे दिसे परवरदिगार, नूर नुराना नज़र किसे ना आईआ। इक्को सतिगुर नानक पुरख अबिनाशी आपणे चरन दए वखाल, सचखण्ड दुआरे दित्ती वडयाईआ। कबीर जुलाहे प्रीती बज्झी नाल, श्री भगवान आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निरगुण हरि नरायण, रसना कोई ना सके कहण, कह कह अन्त कोई ना पाईआ। (२५ चेत २०२० बि)

उन्नी सौ पंजाह बिक्रमी प्यारी। जेठ पंजवीं मंगलवारी। भगवान विष्नूं जां कलाधारी। निहकलंक भइआ अवतारी। विच्च त्रेता रमो राम आया। द्वापर कृष्न भगवान घनकपुरी घनशाम आया। ताबो ताईं माण दवाया। धरनी धर नर सिँघ नरायण आया। (१७ मध्घर २००६ बि)

अन्त समें कलिजुग विच्च आया। निहकलंक आप अखवाया। घनकपुरी विच्च चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ नाम रखाया। राम कृष्न दा तेज हो आया। मनी सिँघ दरस दिखाया। बाल अवसथा सतिगुरू सति सच दीपक प्रगासया। मनी सिँघ दा मन देख विगासया। हो मस्ताना फिरे उदासया। घनकपुरी विच्च चल के आया। सुक्का पिप्पल जिन गुर मेल कराया। सुक्का काष्ट चन्दन हो तिलक लगाया। मनी सिँघ नूं गुर दरस दिखाया। होए अनन्द चरन सिर टिकाया। पूरे सतिगुर बंने लाया। छुडाई देह अन्तकाल गुर धाम सिधाया। (१८ मध्घर २००६ बि)

कृष्न तों शेर सिँघ बण आया। सोहँ शब्द जिन जाप कराया। गुरसिखवां मन आप वसाया। दसवें दवार दा परदा लाहया। एह नेत्र प्रभ आप खुल्हाया। अमृत झिरना निझरों झिराया। नाभ कँवल विच्च है पाया। सारा संसा जीव दा लाहया। नाड़ मास दे पिंजर विच्चों हरि नज़री आया। निज घर वसे आपणा आप छुपाया। किरपा कीती प्रभ एह परदा लाहिआ। महाराज शेर सिँघ सच शब्द सुणाया। (२० मध्घर २००६ बि)

जोत निरञ्जण जगत में आई। कलिजुग विच्च किसे भेद ना पाई। विच्च त्रेता राम रघुराई। विच्च द्वापर कृष्न घनघाई। होया महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई। सोहँ शब्द प्रचलत कराई। बाकी सभन दा माण गवाई। साची लिख्त गुर साचे कराई। आदि अन्त सर्ब रिहा समाई। धार खेल प्रभ जोत प्रगटाई। साध संगत बिन कोई भेत ना पाई। आवे जावे थिर ना रहाई। लोभी मनुआ कित खोजण जाई। हरि की जोत हरिमन्दर आई। विच्च सिख प्रभ जोत प्रगटाई। पैज इस दी आप रखाई। नबज़ चलणों बन्द कराई। प्रगट कीती आप वड्डिआई। धन्न सिख धन्न इस दी माई। धन्न पिता जिस दात एह पाई। घनकपुरी विच्च सेव कमाई। जोत प्रभू दी पूरन विच्च आई। प्रगट पया प्रभ रघुराई। दीना नाथ सर्ब सुखदाई। घनी शाम कल जोत जगाई। कलू काल विच्च खेह मिलाई। सतिजुग सति सति वरताई। सोहँ शब्द दी लिख्त कराई। चार जुग होवे सहाई। महाराज शेर सिँघ विच्च एह वड्डिआई। (८ फग्गण २००६ बि)

खेल कीए जोत रूप अपार। छड्डी देह दो हज़ार विच्च सिरजणहार। जोत सरूप लया जन्म धार। दो हज़ार इक्क जेठ पंज दिन अपार। प्रगट होया घनकपुरी मझार। जिथ्थे बणया गुर दरबार। जिस दी लिख्त होवे अपार। पल्ला फिराया विच्च घर बाहर। प्रगट होया महाराज शेर सिँघ निरँकार। (५ चेत २००७ बि)

शब्द रूप गुर बचन लिखवाया। शब्द रूप विच्च देह दे आया । शब्द रूप प्रभ जोत जगाया। शब्द रूप धुन शब्द वजाया। शब्द रूप सोहँ नाम दृढ़ाया। शब्द रूप अज्ञान अन्धेर चुकाया । शब्द रूप सर्ब थाएं समाया। शब्द रूप किसे नज़र ना आया। शब्द रूप गुरसिखां प्रगटाया। शब्द रूप हँकारीआं हँकार गवाया। शब्द रूप निहकलंक अखवाया। (१ जेठ २००७ बि)

महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान शब्द दीबाण। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान तीन लोक एक समान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान खण्ड ब्रह्मण्ड जोत जगाण। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान निहकलंक बलवान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान भगत बख्शान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान, भगत भगवन्त दोए एक समान। बिन भगत गुर दर ना पाण। बिन दर गुर बूझ ना बुझाण। बिन बूझे गुर दरस ना पाण। बिन दरस ना जोत समाण। बिन जोत ना देह धराण। बिन देह ना प्रभ को पाण। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण गाण। (५ जेठ २००७ बि)

प्रगट भइओ आप निरँकारा, ऐसा दरस प्रभ आण दिखाइओ। चकर चिहन जिस दा कोई ना जाणे, जोत सरूप प्रभ विच्च देह समाइओ। कलिजुग आण जोत प्रगटाई, सतिजुग साचा राह बताइओ । मेरा नाउँ सर्ब सुख दाता, सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवाइओ। खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब में वस्सयो, सर्ब प्रकाश आप रघुराइओ। ब्रह्मा विष्न महेश सर्ब का दाता, तीन लोक प्रभ जोत जगाइओ। विच्च पाताल प्रभ बाशक सेजा, चरन झस्सण लछमी लाइओ। विच्च अकाश प्रभ जोत निरञ्जण, जगे जोत डगमगाइओ। उनंजा पवण चवर सिर होते, जोत अडोल ना किसे डुलाइओ। प्रगटी जोत मात विच्च आ के, महाराज शेर सिँघ नाम रखवाइओ। छड्ड देह होए प्रभ जोत सरूपा, निहकलंक जगत अखवाइओ। (२ भादरों २००७ बि)

जगे जोत जोत जगत जलावे। जगे जोत सर्ब सृष्ट रुवाले। प्रगटे जोत किसे नज़र ना आवे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, निहकलंक जगत अखवावे। निहकलंक जोत जगाई। निहकलंक प्रभ देह तजाई। निहकलंक हो प्रभ सृष्ट हिलाई। निहकलंक सर्ब भेख मिटाई । निहकलंक कुण्ट चार जै जै जैकार कराई। निहकलंक लै अवतार, रंग रूप ना किसे वखाई। तजी देह होए जोत सरूप, महाराज शेर सिँघ निहकलंक नाउँ रखवाई। निहकलंक आप गुण निधाना। निहकलंक आए जगत जिउँ बाना। निहकलंक विरले गुरमुख पछाना। निहकलंक तीन लोक इक्क समाना। निहकलंक अखवाए महाराज शेर सिँघ जोत विष्नूं भगवाना। (१ कत्तक २००७ बि)

पारब्रह्म कलिजुग आया। जुगो जुग प्रभ भेख वटाया। होए मेहरवान सतिजुग सति साचा राह चलाया। त्रेता राम अवतार साचा नाम राम रखाया। द्वापर लै अवतार मोहण माधव कृष्न मुरार नाउँ धराया। निहकलंक कल लै अवतार, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाया। (२६ चेत २००८ बि)

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल मात रचाई, काया कोठड़ी आपणी ढाही, सरगुण रूप दिस ना आई, निरगुण जोत इक्क अलाही, नूर खुदाई अलो वसो इक्क महल्लो धाम अट्टलो गुरमुख साचे विच प्रवेश। (१४ भादरों २०११ बि)

प्रगट आपे आप प्रभ, कल आपणा आप छुपाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, हरिजनां दरस दिखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, साचा शब्द सोहँ चलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत सरूप खेल रचाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, नाउँ निहकलंक धराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, चार कुण्ट डंक लगाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा भेव कल अन्त खुलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, वाली हिंद फड़ तख्त हिलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, तख्त निवासी दिल्ली वाली सरन लगाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, धाम किनारे जमन बणाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सचखण्ड सच धर्म सच छत्तर सिर झुलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत सरूप तेज़ वखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, राणयां महांराणयां दरस दिखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आप ऊँच अगम्म अखवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा नाउँ आप रखवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, बैठ अडोल जगत डुलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, चार वरन सिर चरन झुकाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, दूसर कोए रहण ना पाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सर्ब धाम माण गवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा नाम उत्तम जगत कराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सोहँ शब्द इक्क राग सुणाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, चरन धाम सचखण्ड बणाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, साची पुरी निवास दवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, आपणा आप उपाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, छड्ड देह जोत सरूप हो आया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, मात पित बिन निहकलंक अखवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, गुणवन्त गुण निधान सतिजुग लगाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, गुरसिखां सोहँ साचा वणज कराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, दे दरस जोत विच्च जोत मिलाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, सरन पड़े दी लाज रखाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, राओ रंक इक्क कराया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, निन्दक दुष्ट दुराचार कल अखवाया। कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत सरूप जगत पवण डुलाया । कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, जोत धर कल सचखण्ड लगाया । कलिजुग प्रगट आप आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ नां रखाया। धरया नाम बली बलवान। द्वापर उलटाया नां रखाया काहन । कलिजुग आया निहकलंक जोत समाण। पाई माया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। (६ विसाख २००८ बि)

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। (१ पोह २०१७ बि)

निहकलंक हरि शब्द है, जुग जुग भेख वटाए। इक्क सुहाए दवार बंक है, बंक दवारी आप अखवाए। आपे राओ आपे रंक है, ऊँचां नीचां विच समाए। जन भगतां लाए जोती तनक है, शब्दी वाजा पवण वजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचाए। निहकलंक नर निरँकार है, साचा सति सरूप। लक्ख चुरासी आत्म घर वसाए दवार

बंक है, हरि हरि वड्डा शाहो भूप। नूर उजाला जोती कणक है, पृथ्मी आकाश अन्ध कूप। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग मात भेख धर, करे खेल अनूप सरूप।

निहकलंक नर निरँकार है, निरगुण रूप समाए। पंज तत्त ना कोई आकार है, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसाए। एका शब्द साची धार है, लोआं पुरीआं विच्च समाए। त्रैगुण माया सृष्ट अपार है, प्रभ आपणा रथ चलाए। आपे वसे सभ तों बाहर है, हर घर में आप समाए। आपे गुप्त आपे जाहिर है, आपे अंदर मन्दर डेरा लाए। आपे जोत निरञ्जण कर आकार है, शब्द अनादी धुन वजाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुग जुग भेख वटाए।

निहकलंक नर नरायण है, वसे धाम अगम्म। भगत सुहेला वेखे तीजे नैण है, ना मरे ना पए जम्म। रसना किसे ना सके कहण है, आपे जाणे आपणा नम। जुग जुग जगत वहाए एका वहण है, शब्द बणाए साचा थम्म्। जन भगतां चुकाए लहणा देण है, पवण स्वासी शब्द चलाए दम। सन्त सुहेले विरले गुरमुख लैण है, मनमुख रोवण छंम छंम । धन्न धन्न जो जन रसना कहण है, एका एक पारब्रह्म । जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणा कम्म।

निहकलंक निहकलंक निहकलंक, जोती हरि अकाल है। शब्द वजाए साचा डंक, जुग जुग अवल्लड़ी चाल है। आप रखाए एका अंक, सन्त सुहेले साचे लोकमात आपे भाल है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए दीन दयाल है।

दीन दयाल किरपाल, जुग जुग भेख वटाइंदा। जन भगतां भरे शब्द भंडार, साचे घर दर आप सुहाइंदा। आत्म खोल्हे बन्द किवाड़, आपे हत्थीं कुण्डा लाहंदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़, काल महांकाल मुख छुपाइंदा। वज्जे ताल बहत्तर नाड़, धुन अनादी आप उपजाइंदा। करे जणाई बोध अगाध, साचा मन्दर इक्क सुहाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण डेरा लाइंदा। (२ अस्सू २०१३ बि)

निहकलंक कल प्रभ आए। निहकलंक कल जामा पाए। निहकलंक जोत सरूपी जोत समाए। निहकलंक भरम भुलेखे जगत भुलाए। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाए।

निहकलंक प्रभ नाउँ रखाया। निहकलंक जोत सरूपी जामा पाया । निहकलंक गुरमुख साचे विच्च समाया। निहकलंक आपणा आप कल छुपाया। निहकलंक बेमुख जीवां दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत प्रगटाया।

निहकलंक खेल अपारे। निहकलंक जामा घनकपुरी विच्च धारे। निहकलंक गुरमुख साचे बख्शे चरन प्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कल जामा मात विच्च धारे।

निहकलंक कल जामा पाया। झूठा तन जगत तजाया। जोत सरूपी प्रगट जोत जोत सरूपी खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तम अन्त कराया।

निहकलंक कल अन्त कराए । निहकलंक सोहँ साचा शब्द चलाए। निहकलंक महिंमा अगणत गणी ना जाए। निहकलंक जीव जंत विच्च रिहा समाए। निहकलंक गुरमुख विरले सन्त आप आपणी बूझ बुझाए । निहकलंक प्रभ साचा कन्त गुरमुख भेव खोल्ह खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूजा भउ चुकाए।

निहकलंक खेल आप निरँकार। निहकलंक राम अवतार। निहकलंक कृष्न मुरार। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया जामा धार।

निहकलंक कल जामा पाया। भगत भगवन्त मेल मिलाया। अचरज खेल प्रभ आप कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन सेव लगाया।

निहकलंक अगम्म अथाह। निहकलंक बेपरवाह। निहकलंक दिसे हर थां। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना।

निहकलंक निराधार। निहकलंक जोत अधार। निहकलंक भगत उधार। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आप गिरधार।

निहकलंक निरवैर समाए। निहकलंक ऊँच नीच भेव चुकाए। निहकलंक वड वड नरेश आपणी सेव लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम अन्त जोत प्रगटाए।

निहकलंक सति कर्म कमावणा। निहकलंक पार बिआसों चरन लगावणा। निहकलंक मसतूआणा सच धाम उपजावणा। निहकलंक राणा संगरूर चरन लगावणा। निहकलंक गुण भरपूर जोत सरूप दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा मिटावणा।(६ विसाख २००६)

मन मत बुद्धि दा जो बिआना, रसना नाल गाईआ। इस तों परे खेल श्री भगवाना, बिन अनभव दृष्टी समझ किसे ना आईआ। जो लेखा जाणे दो जहाना, दरगह साची सोभा पाईआ। जिस दा रूप रंग रेख सके ना कोई पहचाना, नादां विच्च ना कोई शनवाईआ । उह मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा काहना, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र गाणा, अवतार पैगम्बर गए कर के सिफ्त सालाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला नौजवाना मर्द मर्दाना निहकलंक बली बलवाना, रूप अनूप शाहो भूप आपणे विच्च छुपाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बदलणा हुक्म दे नाल ज़माना, ज़िमीं ज़मां धुर दा खेल वेख वखाईआ। उह व्यक्ति रूप हो के कदी ना बणे प्रधाना, आपणी सिफ्त विच्च ना कोई सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ।

निहकलंक हरि निरँकारा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जो जोती जोत उजिआरा, रूप रंग रेख कहण कोई ना पाईआ। जो वसे सचखण्ड सच्चे दवारा, दर साचे डेरा लाईआ। जिस नूं कहन्दे सो हरि पुरख निरञ्जण मीत मुरारा, आदि निरञ्जण अगम्म अथाहीआ। अबिनाशी करता श्री भगवान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे कराए करनेहारा, करता पुरख वड वडयाईआ। उस दा बुद्धि विच्च करे क्या कोई विसथारा, विचर के सके ना कोई सुणाईआ। उह मंज़ल चढ़ के निरअक्खर पढ़ के पाओ ओस प्रभ दी सारा, जो परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ ।

जोत निरँकार आदि जुगादी निहकलंक, नर नरायण वड्डी वडयाईआ । जिस दा शब्द अगम्मी वज्जे डंक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा सुणाईआ। जिस दा लक्ख चुरासी जीव जंत, साध सन्त विच्च समाईआ । जो आत्म परमात्म धुर दा कन्त, कन्तूल इक्क अखवाईआ। उस दी पंज तत्त बणाए कोई ना बणत, रजो तमों सतो ना कोई चतुराईआ । उस दा

गढ़ नहीं कोई हउमे हंगत, माया ममता ना कोई अखवाईआ। उह जगत वासना मनशा दी बणाउँदा नहीं कदे संगत, जगत चतुराईआ ना कोई रखवाईआ। उह लेखा जाणे आदि अन्त, जुगा जुगन्त आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नाम अगम्मा बिन अक्खरां वाला मंत, शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वडयाईआ।

निहकलंक हरि एक है, एका एकँकार। ना कोई दूसर टेक है, ना कोई मीत मुरार। ना कोई जगत नेत्र सके वेख है, ना कोई पावे सार। उस दा जोत सरूपी भेख है, जोती जामा अगम्म अपार। जो वसे सचखण्ड देस है, लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां होवे उजिआर। उह सम्बल बह के दए संदेश है, शब्द शब्द दी धार। जिस दा हुक्म हुक्म दा लेख है, गुर अवतार कातब बणे लिखार। उस दा कोई ना जाणे भेत है, बेअन्त सच्ची सरकार। उह सभ नूं वेखे नेतन नेत है, नव सत पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वसणहार सचखण्ड सचे दवार।

निहकलंक हरि आप है, दूसर अवर ना कोई। जिस दा ना कोई माई बाप है, मन्दर मकान ना किसे सोहे। ना कोई अक्खरां वाला पड़े जाप है, ना कोई सिफ्ती सिफ्त सालाहे। ना कदे पवित ना पाक है, दुरमत रूप ना कोई वटोए। ना कोई सज्जण साक है, मीत मुरार ना अखवाए कोई। ना कोई खोले ताक है, ना करता पाए सोए। जिस दा अवतार पैगम्बर गुरूआं गाया भविख्त वाक है, सो इक्को पुरख अकाला आदि अन्त होए। जिस दा अक्खरां वाला दए कोई ना सात है, पढ़न वाला ना उस नूं टोहे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी एका एक जोत बलोए। निहकलंक हरि निरँकारा, निरगुण रूप समाईआ। रूप रंग रेख तों बाहरा, जोती जाता डगमगाईआ। शब्दी शब्द शब्द नगारा, दो जहान करे शनवाईआ। चौदां तबकां वसे बाहरा, चौदां लोक सार ना आईआ। जिस नूं झुकदे चन्द सूर्या ज़िमीं असमान सितारा, दर दर बैठे सीस निवाईआ। इस दा सम्बल धाम न्यारा, साढ़े तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। जिस विच्च बह के वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहार आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। उहनूं तन वजूद दा लालच नहीं कोई विच्च संसारा, पंजां तत्तां ना कोई चतुराईआ। उस दा आदि अन्त दा सिफ्ती इक्क भंडारा, जिस नूं कोटन कोट गा गा आपणा शुकर मनाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगारा सांझा यारा, नूरो नूर अलाहीआ। ज़रा गुरमुखो इस तों उत्ते करो विचारा, विचरन दी लोड़ रहे ना राईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ।

जगत वेखणा ना कोई वक्त, तन वजूद ना कोई वडयाईआ । जिथ्थे निरगुण धार वसे प्रभू दी शक्त, शहनशाह आपणा रंग रंगाईआ । जिस दा हुक्म संदेशा धार अगम्मी वस्त, अमोलक आप टिकाईआ । ओस दे नाल काहदी हसद, वैर भाव विच्च हत्थ किछ ना आईआ । जिस दे विच्च जोत निरँकारा निरगुण हो जाए मस्त, मेहरवान आपणी खुशी मनाईआ। उह खेल वखाए उत्ते अर्श फर्श , फर्श दे उपर आपणी धार प्रगटाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सभ दे उत्ते तरस, रहमत सच कमाईआ। ज़रा उस नूं तक्को आपणी नज़र परत, दीन दुनी तों बाहर कढ़ाईआ। जिस गृह विच्च घर विच्च मुकाम विच्च पुरख

अकाल ने अवतार पैगम्बर गुरूआं खवाली आपणी लाई शर्त, शरअ शरअ विच्च समझाईआ। उस दा खेल सदा असचरज, विद्या विच्च समझ किसे ना पाईआ। उह धुर दा मर्द मर्दाना मर्द, योधा इक्क अखवाईआ। जिस नूं पोह सके ना जगत शरअ वाली करद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ । व्यक्ति नूं लोड़ नहीं मेरी होवे वड्डिआई, वड्डा तन ना कोई अखवाईआ। जिस पुरख अकाल ने आपणी बणत बणाई, सो रचना वेखे चाईं चाईंआ। सो सम्बल बैठा नूर कर रुशनाई, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा शब्द शब्द गुरदेव देवे दुहाई, दो जहानां करे शनवाईआ। उस साहिब दे नाल काहदी लड़ाई, जो सभ दा मालक इक्क अखवाईआ। उह अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार जोत निरँकार जोती जाता पुरख बिधाता बणके अगम्मा राही, रहबर हो के वेख वखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी निहकलंक अवतार जिस दी महिंमा जगत ज़बान लखी ना जाई, कातब चले ना कोई चतुराईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक नूर नुराना परवरदिगार धुरदरगाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ। (२५ अस्सू शहनशाही सम्मत ६)

लेखा हत्थ रक्खे निरँकार, निरगुण वड्डा वड वडयाईआ। साचे सन्तो करो विचार, सतिगुर वसे केहड़े थाईंआ। जिस दा मिले सच दीदार, बिन अक्खां नज़री आईआ। रातीं सुत्यां करे प्यार, दिने जागदयां गले लगाईआ। पंजां चोरां करे ख़बरदार, अंदर लँघण कोई ना पाईआ। नाम खण्डा मारे मार, गोबिन्द गुर गिआ जणाईआ। गुरसिख कोई ना जाए हार, जित सभ दी झोली पाईआ। फ़तह डंका वज्जे विच्च संसार, पुरख अकाल आप वजाईआ। निहकलंक निरगुण अवतार, किसे जम्मया ना पिता माईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, घट घट रिहा समाईआ। जिस ने करना ओस दा सच दीदार, दोए जोड़ मंगो प्रभ झोली देवे पाईआ। फड़ बाहों लए उठाल, आपणे गले लगाईआ। जलवा दस्से इक्क जमाल, ज़हूर इक्को इक्क रुशनाईआ। सभ दा लेखा चुकाए शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे कोई ना वंड वंडाईआ । जे किसे नूं कोई दुःख करे सवाल, सभ दा दुखड़ा दए मिटाईआ। काया मन्दर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस घर गुर सतिगुर बैठा डेरा लाईआ। रौला पाओ ना मिले कोई मिसाल, मिसल सभ दी रिहा लिखाईआ। बिन सतिगुर पूरे सारे होण बेहाल, अग्गे मिले ना बेपरवाहीआ। नाता जुड़े नाल काल, राए धर्म बन्ने थाउँ थाईंआ। चित्रगुप्त लेखा दए वखाल, बच्या कोई रहण ना पाईआ। लाड़ी मौत मारे शाह कंगाल, दर दर घर घर आपणा फेरा पाईआ। चार कुण्ट जे भज्ज भज्ज लभ्भो हत्थ ना आवे दीन दयाल, पान्धीआं पन्ध ना कोई मुकाईआ। हो निमाणे कर बेनन्ती मंगो नाम सच्चा धन माल, अतुट ख़ज़ाना झोली देवे पाईआ। गुर गोबिन्द नाल मेले हो किरपाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता जन भगतां रक्खे उत्तम जाता, आपणी ज़ात ना कोई वखाईआ ।

भगत जनो सुणो सच, हरि साचा सच जणाइंदा। काया माटी भाण्डा कच्च, थिर रहण ना पाइंदा। मन वासना सारे रहे नच्च, गुरमत गुरमुख विरला झोली पाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणी कार कमाइंदा। (१४—१७५ १७६)

रूप ना दीसे निहकलंक, वरते विच्च संसार। रूप ना दीसे निहकलंक, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार। रूप ना दीसे निहकलंक, शब्द लिखावे अगम्म अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, गुरमुखां देवे दरस अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, कल आया धर जोत अपार। रूप ना दीसे निहकलंक, झूठी माया पाई संसार। रूप ना दीसे निहकलंक, रसना लग्गा मदि मास आहार। रूप ना दीसे निहकलंक, कर्म धर्म जीव दोवें दित्ते हार। रूप ना दीसे निहकलंक, ना दीसे तेरा सच दरबार। सतिजुग छत्तर झुल्ले तेरे सीसे, गुरसिखां देवे चरन प्यार । जगाई जोत निहकलंक, जगत जलाया। जगाई जोत निहकलंक, शब्द डंक लगाया। जगाई जोत निहकलंक, चार कुण्ट टुंब उठाया। जगाई जोत निहकलंक, दुख भुख जगत जीव दुखाया । जोत जगाई निहकलंक, सुख कल जीव सर्ब मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, चार कुण्ट वहीर चलाया। जोत जगाई निहकलंक, राओ रंक इक्क कराया। जोत जगाई निहकलंक, ऊँच नीच कोई दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, वरन चार इक्क धाम बहाया। जोत जगाई निहकलंक, सोहँ साचा शब्द चलाया। जोत जगाई निहकलंक, उनंजा पवण सिर छत्तर झुलाया। जोत जगाई निहकलंक, करोड़ तेतीस चरन बहाया। जोत जगाई निहकलंक, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ शरन तकाया। जोत जगाई निहकलंक, बीर बैताल कोई दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, हाकन डाकन सिर मुंडवाया। जोत जगाई निहकलंक, चार कुण्ट मरदंग वजाया। जोत जगाई निहकलंक, बीर मुहम्मद वस कराया। जोत जगाई निहकलंक, कुरान अञ्जील दे मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, सर्बत तीर्थां जोत खिचाया। जोत जगाई निहकलंक, कोई दूसर रहण ना पाया। जोत जगाई निहकलंक, पूजा पाठ कलिजुग सभ मिटाया। जोत जगाई निहकलंक, अन्तकाल कलिजुग कोई दूसर दिस ना आया। जोत जगाई निहकलंक, सच आपणा आप वरताया। जोत जगाई निहकलंक, साचा नाम सतिजुग राह दिसाया। जोत जगाई निहकलंक, सतिगुर मनी सिँघ सतिजुग उपजाया। जोत जगाई निहकलंक, सिर साचा छत्तर झुलाया। जोत जगाई निहकलंक, राजा राणा सभ शरनी लाया। जोत जगाई निहकलंक, महाराज शेर सिँघ नाउँ धराया। कर जोत आकार निहकलंक प्रकाशया। कर जोत प्रकाश, कल सृष्ट करे सभ नासया। कर जोत प्रकाश, करे सभ राओ दासन दासया। कर जोत प्रकाश निहकलंक, साचा शब्द चलावे प्रभ अबिनासया। कर जोत प्रकाश निहकलंक, साध संगत प्रभ करे निवासया। कर जोत प्रकाश निहकलंक, महाराज शेर सिँघ आए जग कर दरस सर्ब दुख नासया।

धरी जोत प्रभ जगत गम्भीर। धरी जोत निहकलंक, गुरसिख पूरन सति सति सरीर। धरी जोत निहकलंक, सोहँ शब्द रसन चलाए तीर। धरी जोत निहकलंक, बेमुख ना बंनूण धीर। धरी जोत निहकलंक, विच्च हउमे लाई पीड़। धरी जोत निहकलंक, बेमुख दित्ते रुला लथ्थे चीर। धरी जोत निहकलंक, करे कलिजुग अख़ीर। धरी जोत निहकलंक, बेमुखां करे शांत सरीर। धरी जोत निहकलंक, होए सहाई वेले भीड़ । धरी जोत निहकलंक, वड पीरां पीर। धरी जोत निहकलंक, महाराज शेर सिँघ गुणी गहीर।

साचा जामा निहकलंक, सचम सच। साचा जामा निहकलंक झूठी दुनियां जाए मच। साचा

जामा निहकलंक, बेमुख कल कचन कच्च । साचा जामा निहकलंक, झूठे राज राग घर दिसण कच। साचा जामा निहकलंक, जोत सरूप प्रगट गुरसिखां गिआ रच। महाराज शेर सिँघ साचा शब्द तेरा, तेरे बचन लिखाए सच।

सच बचन तेरा निहकलंक, आप सदा अडोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, सद आप अतोल। सति बचन तेरा निहकलंक, दुनियां सोई रही अनभोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, कलिजुग तोले पूरे तोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, बेमुख जीव सौं रहे कोल। साचा बचन तेरा निहकलंक, अन्तकाल कलिजुग देवे भुलेखा खोलु। साचा जामा तेरा निहकलंक, सच शब्द वजावे ढोल। साचा जामा तेरा निहकलंक, सर्ब सृष्ट रिहा कल मौल। साचा जामा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक उपर धौल। धर जोत निहकलंक, जगत डुलाया। धर जोत निहकलंक, राओ रंक भुलाया। धर जोत निहकलंक, बेमुखां मन हँकार वसाया। धर जोत निहकलंक, क्रोध चंडाल विच्च धराया। धर जोत निहकलंक, अगन जोत बेमुखां हिरदा जलाया। धर जोत निहकलंक, उलटे गेड़ कलिजुग भवाया। धर जोत निहकलंक, रणभूमी इक्क खेल रचाया। प्रगट जोत निहकलंक, वेखे खेल आप रघुराया। धर जोत निहकलंक, चंड परचंड प्रभ तेज वधाया। धर जोत निहकलंक, झूठा ठूठा कलिजुग भन्न वखाया। धर जोत निहकलंक, सतिजुग साचा लाया । धर जोत निहकलंक, गुरमुखां आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाया। धर जोत निहकलंक, निरहारी निरवैर समाया। धर जोत निहकलंक, गुरसिखां साचा राह दिखाया। धर जोत निहकलंक, जन भगत जामे बहत्तर लिख्त कराया। धर जोत निहकलंक, राजा राणा सभ तख्तों लाहया। धर जोत निहकलंक, एका शब्द एका सुरत चलाया। धर जोत निहकलंक, पतिपरमेश्वर विच्च कलिजुग आया। धर जोत निहकलंक, भगत वछल नाथ त्रैलोकी नाउँ नरायण प्रभ नाम रखाया। प्रगटे जोत निहकलंक, शब्द रसन अन्तकाल कलिजुग आप प्रभ चलाया। प्रगट जोत निहकलंक, बेमुखां हिरदा नष्ट कराया। प्रगट जोत निहकलंक, चार कुण्ट अन्धेर कराया। प्रगट जोत निहकलंक, आपणा भाणा आप वरताया। प्रगट जोत निहकलंक, त्रैभवन धनी जगत हिलाया। प्रगट जोत निहकलंक, कलिजुग जामा धार महाराज शेर सिँघ नाम धराया। (६ सावण २००८ बि)

निहंग सिँघ : सिँघ निहंग सोहणा बस्त्र, काया बस्ती आप वसाईआ। गुर गोबिन्द पहनाया आपणा शस्त्र, छत्रु रिहा घाईआ। इक्क चढ़ाया साचे अस्त्र, नाम घोड़ा रिहा दौड़ाईआ । अठ्ठे पहर वाहिगुरू जाप करी कसरत, आपणा बल वधाईआ। अन्त गोबिन्द पूरी करे हसरत, देवे दरस सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाणा आप सुहाईआ।

काले पीले सोहणे चीरे, चीरे वाला वेख वखाईआ। गुरमुख लाल साचे हीरे, माणक मोती आप उठाईआ। मेल मिलाए वड पीरन पीरे, उच्च पीर होए सहाईआ। कलिजुग आया अन्त अख़ीरे, सभ दी करे सफ़ाईआ। आपणा खेल जाणे धीरे धीरे, धीरज आपणे विच्च समाईआ। जीव जंत बंने नाम ज़ंज़ीरे, हरि का नाउँ संगल इक्क उठाईआ। लहणा देणा चुकाए हस्त कीड़े, कीट हस्त वेखे थाउँ थाईआ। समुंद सागर वरोले नीरे, नाम मधाणा एका पाईआ। दीन मज़हब वरन बरन जो होए लीरे लीरे, अन्तम एका गंढु बंधाईआ।

जिउँ रविदास पाया मुल कसीरे, कंगण दए वडयाईआ। तिउँ गुरमुखां अमृत प्याए साचा सीरे, रस अमृत मुख चवाईआ। अन्तम आपे कट्टे भीड़े, सिर आपणे भार उठाईआ । निहंग सिँघ उठौणा बीड़े, गुर गोबिन्द नाल मिलाईआ। धन्न भाग गुर मिल्या जीउड़े, जीवण मुक्त कराईआ। मनमुख अन्त शब्द वेलणे पीड़े, ना सके कोई बचाईआ। सोहण बस्त्र नीले लीड़े, पगड़ी दस्तार रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रेम रंग रंगाईआ। लोहा पारस जाए बण, मणका माला मन नाल मिलाईआ।

सतिगुर सुणे आपणे कन्न, सो गुरमुख हिरदे अंदर ध्याईआ। मिले वड्डिआई साचे तन, जिस रसना गोबिन्द नाम समाईआ। गुर गोबिन्द नज़र ना आए जीव अंन्ह, गुरमुख वेखण चाईं चाईआ। आदि जुगादि जुग जुग चढ़या रहे गुजरी चन्न, जिस दा इक्को पुरख अकाल पिता माईआ। तिस गोबिन्द कहो धन्न धन्न धन्न, जो गुरमुखां अमृत गिआ प्याईआ। जूठा झूठा ढूठा भन्न, एका रंग चढ़्हाईआ। आपणी हत्थीं ला के गिआ डंन, आपणा हुक्म समझाईआ। पुरख अकाल सभ ने लैणा मन्न, हिंदू मुसलम सिख ईसाई एका इष्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे घर मिलाईआ।

साचा खण्डा सच किरपान, किरपानिध आप पहनाईआ। बिन गुर घड़े ना कोई विच्च जहान, लोहार तरखाण ना कोई वडयाईआ। काया अंदर रक्खे आप ज्ञान, माटी चम्म पोच पोचाईआ। तिस खण्डे मन्नणी सभ ने आण, जो खण्डा गोबिन्द गिआ वखाईआ। प्रगट करे आप भगवान, आपणी सेव कमाईआ। गुरसिखां मिल्या धुर दा दान, लोकमात खुशी मनाईआ। कलिजुग अन्त रहे ना कोई अंजाण, भुल्ल विच्च ना कोई भुलाईआ। गोबिन्द सूरा प्रगट होवे विच्च जहान, लोकमात करे रुशनाईआ। सतिजुग साचा लाए आण, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी होए प्रधान, नौं खण्ड पृथ्मी एका हुक्म जणाईआ। लहणा देण चुकाए कृष्ना काहन, राम नाम ना कोई वडयाईआ। ईसा मूसा ना कोई सलाम, मुहम्मद शरीअत ना कोई रखाईआ। अञ्जील कुरान ना कोई कलाम, मक्का काअबा ना फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर ना देवे कोई पैग़ाम, हुक्मी हुक्म ना कोई जणाईआ। एका हुक्म वरते श्री भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड बंधन पाईआ। गोबिन्द झुल्ले इक्क निशान, सृष्ट सबाई दए वखाईआ। करे खेल आप मेहरवान, आपणी दया आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तन आप सजाईआ।

सिर सोहे चक्कर दुमाला, चक्रवरती चक्कर चलाइंदा। एका दस्सया राह सुख़ाला, गोबिन्द आपणा पन्ध मुकाइंदा। मेरा सिख सभ तों निराला, आप आपणी वंड वंडाइंदा। हत्थ फड़ाई साची माला, मन का मणका आप भवाइंदा। ना कोई संध्धया ना तरकाला, अमृत वेला इक्क वखाइंदा। गुरमुखां मुख पूंझे आप नाल रुमाला, बण सेवक सेव कमाइंदा। अन्त होए आप दलाला, सच दलाली आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे दर सुहाइंदा। (२७ कत्तक २०१८ बि)

निरगुण सरगुण : निरगुण सरगुण दोए सरूप, जोत सरूप विच्च कल देह आया। प्रभ की महिंमा बड़ी अनूप, जीव किसे ने भेत ना पाया। आत्म वेख जीव सच सरूप, साचा प्रभ तेरे विच्च समाया। नज़र ना आवे रेख ना रूप, गुरमुखां प्रभ भेव खुल्हाया । महाराज

शेर सिँघ जोत सरूप, निहकलंक कल नाउँ रखाया। (२६ चेत २००८ बि)
महाराज शेर सिँघ कलंक निह, निरगुण सरगुण दोवें रूप उपाया। (१७ हाढ़ २००८ बि)

चार कुण्ट प्रभ जोत बिलोए। जोत प्रकाश करे तीन लोए। तीन लोक प्रभ एका जोत वरते जुगो जुग सोए। जोत निरञ्जण मातलोक धरे प्रभ अबिनाश, दूसर नाहीं कोई। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ वसे विच्च वरभंड, निरगुण सरगुण रूप दोए। निरगुण सरगुण प्रभ जोत आकारी। कलिजुग होया प्रगट जिउँ रामा कृष्न मुरारी । मूर्ख मुगधां सुध ना आई, बणे मदि मासी आहारी। साध संगत निहकलंक जोत जगाई, जो जन ढह पए प्रभ चरन दवारी। महाराज शेर सिँघ तेरे नाम दुहाई, चार कुण्ट बेमुखां करे खुआरी। (१७ हाढ़ २००८ बि)

सरगुण जो जाणदा। पूरा हरि विच मात पछाणदा। निरगुण हरि जोत सरूप रंग रेख भेख ना कोई वखाणदा। सरगुण सति सरूप मात आवे जावे जामा पावे नां धरावे, एका शब्द गावे गुण निधान दा। जोती जोत सरूप हरि, दोहां रंगाँ एका सुख, आपणा आप माणदा। (११ चेत २०११ बि)
निरगुण रूप निर निरवैर है। सरगुण सरूप सतिगुर पूरा विच्च मात हाज़र हज़ूर है। निरगुण रूप साचा नूर, इक्को शब्द तूर है। सरगुण रूप जगत अनूप, सतिगुर पुरा सर्ब कला भरपूर है। दोवें खेल करे हरि वड्डा शाहो भूप एका एक सति सरूप है। (१३ चेत २०११ बि)
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण दोए रूप कर वखाए, वेला गिआ सर्ब पछताए, हत्थ ना आए किसे चतर सुघड़ वड सिआणआ। (१३ चेत २०११ बि)

निरगुण नर हरि नर हरे। सरगुण रूप कर अकार, जोत सरूपी खेल करे। भरम भुलेखा जगत विचार, अचरज खेल प्रभ आप करे। लक्ख चुरासी होई पार, गुरमुखां सिर हत्थ धरे। पूरब कर्म कर विचार, देवे साचा नाम वरे। पंजां तत्तां मारे शब्द मार, एका वखाए सच घरे। जगाए जोत अपर अपार, आत्म खोलु सच दरे। अन्तम अन्त ना आए हार, हरि चुकाए जम डरे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, अमृत आत्म भंडारा आप भरे।
निरगुण होया हरि मेहरबान। सरगुण रूप धरे भगवान। दोहां जोती इक्को गोती, बणे पुरख सुजान। लक्ख चुरासी रही सोती, धरे भेख हरि कृष्ना काहन। आप मिटाए वरन गोती, ऊँच नीच ना कोई रंक राजान। जन भगत बणाए साचे मोती, देवे माण गुण निधान, वाली दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण रूप अगम्म, भेव कोई ना पाइंदा।
आवे जाए ना जन्मे ना जाए मर, एका रंग समाइंदा। एका वस्से साचे घर, दूजे दर गुरमुख आत्म दर खुलाइंदा। जोत सरूपी नूर कर, हरि साचा डगमगाइंदा। आत्म खोले साचा सर, सच तीर्थ इशनान कराइंदा। एका रूप एका गोत नर हरि हरि नर, वरन बरन विच कदे ना आइंदा। जो जन साची सरन गए पड़, प्रभ अबिनाशी आप चुकाए मरना डरना, लक्ख चुरासी गेड़ कटाइंदा। जन भगतां खोले हरना फरना, आपे जाणे आपणी करना,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क अकेला रंग नवेला जगत दुहेला, जन भगतां मेला घर सच वखाइंदा।

निरगुण रूप नूर जोत अकार है। सरगुण रूप सच पछाणे वरते विच संसार है। शब्द देवे जगत बबाण, गुरमुख साचा होवे विच असवार है। बेमुखां अन्तम आई हार, कलिजुग तेरी अन्तम दिसे काली धार है। जगत विछोड़ा साचे कन्त, नर नारी होए खुआर है। भुल्ले फिरन चेला गुर, काया अगन अंगिआर है। गुरमुखां आत्म सदा भुक्खी, मिले दरस हरि निरँकार है। अठ्ठे पहर रहण सुखी, जगे जोत अगम्म अपार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जन भगतां आए चल दवार है। (७ हाढ़ २०११ बि)

जोत निरञ्जण जोत जगाए। सतिगुर साचा मात उपजाए। निरगुण सरगुण एका जोती सरगुण भेख मात वटाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपे जाणे जीवां जंतां आपे समझाए।

सरगुण रूप सदा विच मात। निज घर निरगुण रूप रक्खे वास। आपे जाणे आपा आप। सरगुण रूप सर्ब वखाणे, जगत जपाए साचा जाप। खड़ा रहे सद सरहाणे, मेट मिटाए तीनो ताप। गुरमुख साचा रंग साचे माणे, कोटन कोट उतरे पाप। आप चलाए आपणे भाणे, गुर पूरा वड्ड प्रताप। कोई ना वेखे राजे राणे, गुरमुख साचे बाल अंञाणे, आपे बणे माई बाप। सतिगुर साचा सच वखाणे, भगत जनां दी आपे जाणे, इक्क जपाए साचा जाप। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा रिहा कर, पुरख अबिनाशी आपे आप।

निरगुण रूप नर निरँकारा। सद वसे आपणे आप सहारा। लोकमात राह साचा दस्से, सरगुण रूप लए अवतारा। जन भगतां आत्म सदा रसे, खोल्हे बन्द कवाड़ा। शब्द बाण साचा कस्से, पंजां चोरां मार मिटाए, पिच्छे हटाए झूठी धाड़ा। साचा राह एका दस्से, आत्म जोती काया नाड़ा। जोत सरूपी अंदर वस्से, दिवस रैण अठ्ठे पहर लगा रहे सच अखाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे सन्त जनां, आत्म दर साचा खोल्हे, शब्द सरूपी विच्चों बोले, फिरदा रहे सद पिच्छे अगाड़ा।

सरगुण रूप सदा सुखदेवा। लोकमात हरि नाम जपाए, रसना फल खवाए अमृत मेवा। गुरमुख साचे आप जगाए, मस्तक लाए शब्द थेवा। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, आप कराए साची सेवा। दरस दिखाए थाउँ थाईं, नाम जपाए साची जिह्वा। जोती जोत सरूप हरि, साची दया आप कमाए, सतिगुर साचा आप उपजाए, जीआं जंतां रिहा समझाए, आप लगाए साची सेवा। (१७ हाढ़ २०११ बि)

तन जन साचा मन्दर है। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी वसे अंदरे अंदर है। इक्को शाह वड्डा भूपन भूपी, डेरा लाए डूंघी कंदर है । निरगुण जोत रूप सति सरूपी, बेमुख लभ्भे बाहर जूठे झूठे मन्दर है । ना कोई रंग ना कोई रूपी, जोती जोत सरूप हरि, उच्चे टिल्ले फिर फिर थक्के गोरख मछन्दर है। (१६ हाढ़ २०११ बि)

दूजा दोए करे अकार। निरगुण सरगुण खेल अपार। निरगुण निराहार सरगुण शब्द अधार। देवे वस्त इक्क अट्टल, लोकमात अपार। साची जोती आप टिकाए सच महल्ल, काया कर अकार । शब्द सुनेहुड़ा रिहा घल्ल, लक्ख चुरासी करनी ख़बरदार। अन्त कराए जल थल,

बेमुख वहाए वैहन्दी धार। कलिजुग तेरा अन्तम कल, आत्म हँकारी जगत विकारी होवण छार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आत्म भरे शब्द भंडार। (२० हाढ़ २०११ बि)

सरगुण रूप सच्ची सरकारा। निरगुण रूप जोत अकारा। सरगुण रूप दिस्से संसारा। निरगुण रूप शब्द धुन देवे धुनकारा। सरगुण रूप दरस परस जीव जंत उधरे पारा। निरगुण रूप हरि साचे कन्त, विरला मिले भगत प्यारा। सरगुण रूप आवे जावे मात रहावे वारो वारा। निरगुण रूप एका दस्से धारा। अट्टल एका एक निरँकारा। सरगुण रूप हरि खेल अपारा। वल छल कर जगत भुलावे, जुगा जुगन्ती साची कारा। निरगुण रूप इक्क अचल्ल निराहार निराधारा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी खेल आप कराए भगत उपजाए जगत वड्डिआए, एका मेल मिलाए, दूई द्वैती जगत नाता तुट्टे आत्म हँकारा। (१२ भादरों २०११ बि)

निरगुण धार सरगुण खेल, सरगुण मेल निरगुण जोत अकार, निरगुण निराहार सरगुण सालस नार घर सवाणी। (१२ भादरों २०११ बि)

सरगुण रूप अपार, नौं दवार है। निरगुण रूप अपार, दसवें प्यार है। सरगुण रूप अपार सर्ब संसार है। निरगुण रूप अपार जोत निरँकार है। सरगुण रूप अपार, पंजां तत्तां मात उडार है। निरगण रूप अपार, एका जोती पुरख बिधाते ना कोई पावे सार है। निरगुण सरगुण खेल अपार, निहकलंकी अन्तम वार है । भरम भुलाए जगत अपार, किसे ना आए सार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौं दवारे दर दवार, लक्ख चुरासी कर पछाण, लोकमात जिह वखाण है। (६ पोह २०११ बि)

जोती जामा श्री भगवाना, हरिजन सचे विच्च पछानया। निरगुण रूप अपार, किसे ना जाणआ। निरगुण रूप अपार, खेल महानया । निरगुण रूप अपार, किसे हत्थ ना आवे राजे राणआ। निरगुण रूप अपार, खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरानया। निरगुण रूप अपार, ना कोई मन्ने कन्ने जीव निधाने, वस्से साचे घर सच टिकाणया। निरगुण रूप अपार, किसे दिस ना आए दर, सच महल्ल ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार, आपे करे वल छल, अछल अछल्ल इक्क अखवा रिहा। निरगुण रूप अपार, आपे वसे जल थल, थल जल आप समा रिहा। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी धार। निरगुण रूप अपार, जगत अमोलया। निरगुण रूप अपार, किसे ना तोलया। निरगुण रूप अपार, साचे दर दवारा किसे ना खोल्लया। निरगुण रूप अपार, आणा जाणा आपणे घर साचे सर, शब्द भंडारा आपे एका खोल्लया । निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग आपे मेलया।

निरगुण रूप अपार अन्धानया। निरगुण रूप अपार, ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार, एका एक एक भगवानया। निरगुण रूप अपार, आपे वसे आपे जाणे सच टिकाणिआ। निरगुण रूप अपार, लक्ख चुरासी बणत बणाए, साची वस्त इक्क टिकाए, पवणी शब्दी जोती नूर महानया। निरगुण रूप अपार, वरन गोती ना कोई जणाए, मात पित ना गोद उठानया। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, एका आपणा रंग आपे आप पछानया।

निरगुण रूप अपार, अव्वलड़ी धारया। निरगुण रूप अपार, इक्क अगम्मड़ी साची जोत अकारया। निरगुण रूप अपार, दिसे ना किसे काया खलड़ी, साचे मन्दर आप सुहा रिहा। निरगुण

रूप अपार, सद अतोल कदे ना तुलड़ी, सृष्ट सबाई आप तुला रिहा। निरगुण रूप अडोल, लक्ख चुरासी आप डुला रिहा। निरगुण रूप अपार, हरि हरि वड्डा शाहो भूप, जोती नूरा सति सरूप, सच सिँघासण एका एक डगमगा रिहा। (५ माघ २०११ बि)

निरगुण रूप अपार सच घर वासिआ। निरगुण रूप अगम्म अपार, वेख वखाणे सच मण्डल साची रासिआ। निरगुण रूप अगम्म, हड्ड मास नाड़ी ना कोई चंम, आवे जावे ना विच्च गरभासया। निरगुण रूप अगम्म, करे कराए आपणा काम, हरि साजन साचा शाहो शाबासिआ। निरगुण रूप अगम्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूर कर प्रकाश, गुरमुख काया मन्दर अंदर करे वासया।

निरगुण रूप अगम्म, ना कोई नेत्र नीर वहाए छंम छंम, हरख़ सोग सोग हरख़ कदे ना आसीआ। ना मरे ना जाए जम्म, ना कोई माता गोद उठासीआ। ना कोई पवण स्वासी लए दम, आप आपणे विच्च समासीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मन्दर अंदर हरि साचा डेरा रिहा लगासीआ । निरगुण रूप अगम्म, हरि बलवानया। निरगुण रूप अगम्म जीव निधानया। निरगुण रूप अगम्म, सच धुर फ़रमाणआ। निरगुण रूप अगम्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणी आणआ। (६ जेठ २०१२ बि)

निरगुण रूप अपार, नूर नुरानया। सरगुण खेल करतार, पेखा भेख विच जहानया। निरगुण रूप अपार, नर नरायण नर किसे पछानया। निरगुण रूप अपार, काया जोती जगे इक्क भगवानया । निरगुण रूप अपार, आपे जाणे आपणी सार, आदि अन्त ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार शब्द मिले वस्त अपार, देवे हरि किरपा कर वाली दो जहानया। दोहां घरां इक्क प्यार, आपे नारी पुरख भतार, साची सेजा पैर पसार, सुत्ता रहे गुण निधानया । निरगुण रूप अपार, भगत अमोलया। सरगुण रूप अपार, पुरख अबिनाशी अंदरे अंदर बोलया। निरगुण रूप अपार, भेव किसे ना खोल्लया। सरगुण रूप अपार जोती जगे अपर अपार, दसम दवारी पड़दा खोल्लया। निरगुण रूप अपार, सरगुण बन्ने साची धार, शब्द जोती विच्च टिकाए, आप आपणी दया कमाए, दूसर किसे दिस ना आए, गुरमुखां पड़दा आपे खोल्लया। निरगुण रूप अपार सदा निरवैरया। ना कोई जाणे जंत गवार, ना कोई करे सन्त अधार, झूठे वहण जगत वहा रिहा। नर नरायण पावे सार, दर घर साचे एका बहण, मिले मेल कन्त भतार। दरस वेखे तीज नैणा, आत्म खोले बन्द किवाड़, नाता तुटे भाई भैणां, तत्ती वा ना लगे हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द तन पहनाए, नेड़ ना आए मौत लाड़। (१२ जेठ २०१२ बि)

निरगुण रूप अगम्म, ना कोई हड्ड मास ना नाड़ी चंम, आपणा आप करे अकारया। सरगुण रूप रक्खे सहारा दम, पवण स्वासी विच टिका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण खेल कर, आपणी रचना आप रचा रिहा।

निरगुण निराहार सदा निरवैरया। सरगुण पाए सार, काया मन्दर अंदर डूंघी कंदर आपे बह रिहा। बाहर लाए तीजा जंदर, ना कुफल कोई खुल्ला रिहा। उच्चे टिल्ले फिर फिर थक्के लभ्भदे फिरन गोरख मछन्दर, साचा राह ना किसे वखा लिआ। निरगुण जोत जगे निरालम, सन्त सुहेले साचे तेरे अंदर दीप निराला आप जगा रिहा। लक्ख चुरासी भौंदी

बन्दर, नर हरि श्री निज घर साचे किसे ना पा लिआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा वेस कर, गुरमुख साचे सन्त जनां आत्म अंदर साची सेजा आपणा डेरा ला लिआ। (१८ हाढ़ २०१२ बि)

पंचम जेठ हरि संगत उपदेश, निरगुण रिहा जणाईआ। सरगुण विच्च प्रवेश, सरगुण रूप रिहा बणाईआ। निरगुण सद आदेस, सरगुण रिहा कराईआ। सरगुण धारी केस, गोबिन्द रूप वटाईआ । गोबिन्द नर नरेश, निरगुण नेंह लगाईआ। निरगुण रिखी केश, गोबिन्द गर्वधन रिहा उठाईआ। सरगुण दस दस्मेश, दस धारा रिहा वहाईआ। निरगुण सेजा बाशक शेश, सांगो पांग हंढाईआ । सरगुण दर दरवेस, निरगुण आप हो आईआ। निरगुण निरधन वेस, सरगुण सहज मिलाईआ। सरगुण साचे देस, निरगुण डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण दोए खेल खिलाईआ।

निरगुण निरवैर सरगुण समाया। सरगुण एका लहर, निरगुण शब्द चलाया। निरगुण निज घर सैर, सरगुण रिहा कराया । सरगुण तारे कर कर मेहर, निरगुण आपणी दया कमाया। निरगुण वसे काया शहिर, सरगुण दसम दवारी घर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप वटाया।

निरगुण निरलज है, सरगुण लाजावन्त। सरगुण अंदर रिहा सज है, बन्द कराए नौ दवार, पुरख अबिनाशी बंनै धार, कलिजुग सतिजुग मेला। गुरमुखां गुर आप विचार, गुर गोबिन्द गुर चेला। इक्क कराए जै जै जैकार, हरि साचा सज्जण सुहेला। जन भगतां करे ख़बरदार, कलिजुग अन्तम वेला। नानक मिल्या नर निरँकार, जोत निरञ्जण चढ़या तेला। आया गिआ विच संसार, अचरज खेल खेला। गोबिन्द रूप अपर अपार, गोबिन्द काया सच अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तम मेला गुर गुर चेला । (२५ पोह २०१३ बि)

हरिजन साचे सन्त दुलार, प्रभ पूरन आस कराईआ। अन्तम मेला विच्च संसार, इक्क इकेला वेख वखाईआ। गुर चेला सोहण दर दवार, बंक दवारा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ।

निरगुण रूप नर निरँकार, सरगुण विच्च समाया। सरगुण साचा कर प्यार, शब्दी शब्द जणाया। साचा शब्द डंक अपार, निरगुण रिहा वजाया। सरगुण बोले विच्च संसार, रसना जिह्वा रिहा हिलाया। निरगुण नर हरि तेरी धार, निरधन दए तराया। सरगुण ढह पै दवार, दर दरवेशा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे धारी केसा, मेल मिलाए दस दसमेसा, मूंड मुंडाया दिस ना आया।(२ चेत २०१४ बि)

पीर पैगम्बर गुर अवतार करन विचार, एका घर वज्जे वधाईआ । असीं सेवा करीं जुग चार, जुग जुग वेस वटाईआ। मन्नदे रहे इक्क निरँकार, निरगुण नूर रुशनाईआ। पंज तत्त काया कर अकार, लोकमात खुशी हंढ़ाईआ। दोए दोए रूप विच्च संसार, जीवण जुगत बिताईआ। सरगुण नाता जोड़या पुरख नार, पुत्तर धीआं बंस सुहाईआ। निरगुण खेल अपर अपार, जोती जोत जोत मिलाईआ। सरगुण खेल विच्च गए हार, जगत बंधन नाल रखाईआ। निरगुण जोत कर उतरे पार, घर मिली सरन सरनाईआ। करे खेल अगम्म अपार, आपणा

राह आप चलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ ।

सरगुण तेरी जगत धार, गुर अन्तर मुख छुपाया। पंज तत्त काया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, जगत सवाणी सेज हंढ्ढाया। आत्म अन्तर खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ आप कराया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका घर बाहर, एका मन्दर डेरा लाया । सरगुण आसा तृसना करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। सरगुण मंगे शमशीर, तीर कमान चिल्ला नाल उठाईआ। निरगुण करे अन्त अख़ीर, आपणा रूप ना कोई वखाईआ। सरगुण जोधा सूरबीर बली बलवान, भुजां आपणीआं आप उठाईआ। निरगुण करे खेल महान, हुक्मी हुक्म हुक्म वरताईआ। सरगुण वेखे जगत नेत्र मार ध्यान, निरगुण बण उठ करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर धार विच्च संसार, निरगुण सरगुण हो उजिआर, आपणा रंग आप वखाईआ।

निरगुण तत्त कहे तन नानक, सरगुण नानक निरगुण रिहा वडयाईआ। निरगुण खेल अत भयानक, सरगुण निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सरगुण कहे प्रभ खेल अचन अचानक, भेव कोई ना आईआ। निरगुण कहे सरगुण अणजाणत, सरगुण कहे बिन निरगुण बूझ ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ।

सरगुण कहे निरगुण बाप, निरगुण कहे सरगुण पूत रूप अखवाईआ । सरगुण कहे निरगुण प्रताप, निरगुण कहे सरगुण मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण जाप, निरगुण कहे सरगुण करे पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे साथ, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी ना कोई रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण समरथ, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी चले ना कोई वडयाईआ । सरगुण कहे महिमा अकथ्थ, निरगुण कहे सरगुण रागी राग अलाईआ। सरगुण कहे निरगुण सच्ची वथ, निरगुण कहे सरगुण आप वरताईआ । सरगुण कहे निरगुण वसे घट घट, निरगुण कहे सरगुण मेरे सिर पड़दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

सरगुण कहे निरगुण दाता, निरगुण कहे सरगुण भंडार वरताइंदा । सरगुण कहे निरगुण पुरख बिधाता, निरगुण कहे सरगुण पुरख नारी खेल कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण उत्तम ज़ाता, निरगुण कहे सरगुण ज़ात पात रंग चढ़ाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बैठा रहे इक्क इकांता, निरगुण कहे सरगुण अंदर मेरा आसण लाइंदा। सरगुण कहे निरगुण खेल तमाशा, निरगुण कहे सरगुण गोपी काहन रूप धराइंदा। सरगुण कहे जोत प्रकाशा, निरगुण कहे सरगुण जोती जोत डगमगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सचखण्ड रक्खे वासा, निरगुण कहे सरगुण अंदर रूप अनूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा ।

सरगुण कहे निरगुण बलवान, आदि जुगादि समाया। निरगुण कहे सरगुण मेरा निशांन, लोकमात मात वडिआया। सरगुण कहे निरगुण मेहरवान, निरगुण कहे सरगुण दीनन दया कमाया। सरगुण कहे निरगुण बेपहचान, निरगुण कहे सरगुण मेरा रूप वटाया। सरगुण कहे मेरा भगवान, निरगुण कहे सरगुण साचा पूत सुहाया। सरगुण कहे निरगुण

देवे दान, निरगुण कहे सरगुण साची वंड वंडाया। सचखण्ड करे खेल महान, आपणा झगड़ा आप मुकाया। आपणी इच्छआ कर परवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा अंग वखाया। गुर गुर रूप विच्च जहान, लोकमात फेरा पाया। बाहरों दिसे पंज तत्त दुकान, सरगुण रूप नज़री आया। अंदर लुक्कआ रहे भगवान, निरगुण आपणा मुख छुपाया। बाहरों बोले रसना जबान, बत्ती दन्द जगत वखाया। अंदरों निरगुण देवे धुर फ़रमाण, सचखण्ड निवासी आप सुणाया। बाहरों वेखण नक्क मूह हत्थ दो दो कान, अंदर बिन रंग रूप रिहा समाया। बाहरों तक्कण बिरध बाल जवान, अंदर निरगुण बिरध बाल रूप ना कोई वटाया। बाहरों तक्कण जीव जहान, जगत नेत्र वेख वखाया। अंदरों निरगुण भगतां वखाए आपणा सच निशान, सति सतिवादी दया कमाया । सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण खेल श्री भगवान, गुर गुर बंधन एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा टिक्का आपणे मस्तक इक्क लगाया। सरगुण कहे निरगुण बेपरवाह, बेअन्त भेव ना आइंदा। निरगुण कहे सरगुण चलाए राह, लोकमात राह वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण शहनशाह, निरगुण कहे सरगुण जीव जंत रईयत हंढ्ढाइंदा। सरगुण कहे निरगुण प्रगटाए आपणा नां, निरगुण कहे सरगुण रसना जेहवा सर्ब जपाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे साचे थां, निरगुण कहे सरगुण मेरा बंक सुहाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आदि जुगादि बेपहचां, निरगुण कहे सरगुण मेरा रूप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणे रंग रंगाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण बेअन्त, निरगुण कहे सरगुण सन्त रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा कन्त, निरगुण कहे सरगुण बण सवाणी साची सेव कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण आदि अन्त, निरगुण कहे सरगुण जुग जुग वेस वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा मणीआ मंत, निरगुण कहे सरगुण मेरा नाउँ सलाहीआ । सरगुण कहे निरगुण वसे धाम सोभावन्त, निरगुण कहे सरगुण मेरी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल कराईआ।

निरगुण कहे सरगुण सुखवन्त , सरगुण कहे निरगुण हत्थ वडयाईआ। निरगुण कहे सरगुण सोभावन्त, सरगुण कहे निरगुण सच्चा माहीआ। निरगुण कहे सरगुण महिमा अगणत, सरगुण कहे निरगुण हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाईआ।

सरगुण कहे निरगुण खेल, निरगुण कहे सरगुण मेल मिलाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सज्जण सुहेल, निरगुण कहे सरगुण संग रखवाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे धाम नवेल, निरगुण कह सरगुण बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा वेस वखाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण दातार, निरगुण कहे सरगुण होए सहाईआ । सरगुण कहे निरगुण प्यार, निरगुण कहे बिन सरगुण प्यार मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण आधार, निरगुण कहे बिन सरगुण टेक ना कोई रखवाईआ। सरगुण कहे निरगुण जैकार, निरगुण कहे बिन सरगुण जै जैकारा ढोला ना कोई सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण

उजिआर, निरगुण कहे सरगुण करे जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ।

सरगुण कहे निरगुण सुख, निरगुण कहे सुख सरगुण विच्च रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण उजल मुख, निरगुण कहे सरगुण साचे मुख सलाहीआ। सरगुण कहे निरगुण कदी ना आया किसे कुक्ख, निरगुण कहे सरगुण मेरी कुक्ख सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना मानस ना कोई मानुख, निरगुण कहे सरगुण मेरा मानस रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना तृसना ना कोई भुक्ख, निरगुण कहे सरगुण मिलण दी तृसना भुक्ख मैं रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सरगुण कहे निरगुण जस, निरगुण कहे सरगुण जस मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण आपणे अंदर गिआ वस, निरगुण कहे मैं सरगुण अंदर डेरा लाईआ। सरगुण कहे निरगुण जोत करे प्रकाश, निरगुण कहे सरगुण अंदर नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणा भेव चुकाईआ।

सरगुण कहे निरगुण मित, निरगुण कहे सरगुण मित्र प्यारया हत्थ वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण रहे नित, निरगुण कहे सरगुण नवित्त फेरा पाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे हित, निरगुण कहे सरगुण मिल मिल खुशी मनाईआ। सरगुण कहे निरगुण अबिनाशी अचुत, निरगुण कहे सरगुण चेतन्न रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण एका घर घर मन्दर दए वडयाईआ।

सरगुण कहे निरगुण बंक, निरगुण कहे सरगुण बंक दुआरी सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण डंक, निरगुण कहे सरगुण मेरा नाद सुणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण महिमा अगणत, निरगुण कहे सरगुण मेरा भेव खुलायंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण ओट, निरगुण कहे सरगुण माण वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण भंडार अतोट, निरगुण कहे सरगुण हत्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे साचे किला कोट, निरगुण कहे सरगुण अंदर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप चलाईआ। (१६ माघ २०१८ बि धिंगाली)

सरगुण कहे निरगुण सहारा, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा रूप ना कोई जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण शहनशाह सच्ची सरकारा, निरगुण कहे सरगुण सच्ची कार कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण हुक्म वरतारा, निरगुण कहे सरगुण चले सच रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंधन आप रखाईआ।

सरगुण कहे निरगुण पुरख अकाल, निरगुण कहे सरगुण जोत रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण दीन दयाल, निरगुण कहे सरगुण साचा लाल नाउँ रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण चले अवल्लड़ी चाल, निरगुण कहे सरगुण चाल निराली इक्क जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना खाए काल, निरगुण कहे सरगुण तेरे काल चरन सरन बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ।

सरगुण कहे निरगुण नूरानी जोत, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी जोत कम्म किसे ना आईआ।

सरगुण कहे निरगुण वसे साचे कोट, निरगुण कहे बिन सरगुण लोकमात किला कोट नज़र कोई ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण उत्ते मैं होया मोहत, निरगुण कहे मैं सरगुण पिच्छे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अव्वलड़ा आप कराईआ।

सरगुण कहे निरगुण अनुभव प्रकाश, निरगुण कहे सरगुण नूर नूर समाया। सरगुण कहे निरगुण शाहो शाबाश, निरगुण कहे सरगुण शहनशाह लोकमात वडिआया। सरगुण कहे मैं निरगुण दास, निरगुण कहे मैं सरगुण बण दासी दास सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाया।

सरगुण कहे निरगुण अछल, निरगुण कहे अछल सरगुण विच्च समाया। सरगुण कहे निरगुण बीर बल, निरगुण कहे बल सरगुण अंदर धराया। सरगुण कहे निरगुण अट्टल, निरगुण कहे अट्टल मुनारा सरगुण मात वडिआया। सरगुण कहे निरगुण जोत रिहा रल, निरगुण सरगुण तेरी जोती जोत डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा आपे पाया।

सरगुण कहे निरगुण गुण निधान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा गुण कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण शाह सुल्तान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी चले ना कोई शहनशाहीआ। सरगुण कहे निरगुण इक्क सति निशान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा सति निशाना ना कोई उठाईआ। सरगुण कहे निरगुण नौजवान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा जोबन ना कोई हंढ्ढाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे सचखण्ड मकान, निरगुण कहे बिन सरगुण सचखण्ड दुआरा कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण इमान, निरगुण कहे बिन सरगुण शरअ ना कोई चलाईआ। सरगुण कहे निरगुण सूरबीर बलवान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा बल ना कोई अजमाईआ। सरगुण कहे निरगुण इक्को आण, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा हुक्म कीमत कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खेल खेल आपणी खुशी मनाईआ। सरगुण कहे निरगुण सूरा सर्बंग, निरगुण कहे सरगुण सूरबीर प्रगटाया। सरगुण कहे निरगुण मरदंग, निरगुण कहे मरदंग सरगुण हत्थ फड़ाया। सरगुण कहे निरगुण बिन रूप रंग, निरगुण कहे आपणा रूप रंग सरगुण मात धराया। सरगुण कहे निरगुण सोहे सच पलँघ, निरगुण कहे सॅच पलंघ सरगुण अंदर आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि निरगुण सरगुण आपणी वंड वंडाया।

सरगुण कहे निरगुण निरँकार, निरगुण कहे सरगुण विहार चलाईआ। सरगुण कहे निरगुण अगम्म अपार, निरगुण कहे सरगुण अगम्मड़ी धार वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण अलक्ख जैकार, निरगुण कहे सरगुण जै जै मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरुगण किसे ना आए विचार, निरगुण कहे सरगुण अंदर वड़ वड़ आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव रखाईआ। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी इन्दर राम)

सरगुण कहे निरगुण वसे ओहले, निरगुण कहे सरगुण आपणा भेव जणाईआ। सरगुण

कहे निरगुण मेरे अन्तर बोले, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी धुन ना कोई सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण रहे सदा रहे अडोले, निरगुण कहे सरगुण अडोल रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा पड़दा खोल्हे, निरगुण कहे सरगुण सेवा करनी मेरी वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण साचा तोल तोले, निरगुण कहे सरगुण कंडा हत्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण सुणाए अगम्मी ढोले, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरे गीत ना कोई सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरे अन्तर मौले, निरगुण कहे सरगुण फल फुलवाड़ी इक्क लगाईआ। सरगुण कहे निरगुण अमृत भरया कौले, निरगुण कहे सरगुण हरी सिंच क्यारी आप कराईआ। सरगुण कहे निरगुण देवे माण उपर धौले, निरगुण कहे सरगुण धौल उपर मेरी करे रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण नूर अव्वले, निरगुण कहे सरगुण मेरा नूर इल्लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नूर विच्च धराईआ।

सरगुण कहे निरगुण परवरदिगार, एका नूर समाया। निरगुण कहे सरगुण मेरा यार, साची यारी आप हंढ्ढाया। सरगुण कहे निरगुण वसे धाम न्यार, निरगुण कहे सरगुण खेड़ा आप वसाया। सरगुण कहे निरगुण हक़ बोले जैकार, निरगुण कहे सरगुण जगत रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाया। सरगुण कहे निरगुण बेऐब, निरगुण कहे सरगुण ऐब ना कोई जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा साहिब, निरगुण कहे सरगुण मेरा साबत रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण गायब, निरगुण कहे सरगुण ज़ाहिर ज़हूर नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंधन आप वखाईआ।

सरगुण कहे निरगुण जलाल, निरगुण कहे सरगुण जलवा मात प्रगटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण दलाल, निरगुण कहे सरगुण विचोला खेल कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे सच्ची धर्मसाल, निरगुण कहे सच्ची धर्मसाल सरगुण गढ़ बणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वजाए ताल, निरगुण कहे ताल तलवाड़ा सरगुण हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भर्म आप चुकाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण जोती जाता, निरगुण कहे सरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण पुरख बिधाता, निरगुण कहे सरगुण पुरख रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना किसे पछाता, निरगुण कहे सरगुण गुरमुख आपणे आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सरगुण कहे निरगुण संयोग, निरगुण कहे सरगुण संग निभाया । सरगुण कहे निरगुण दरस अमोघ, निरगुण कहे सरगुण दरसी दरस दे दे तृप्त बुझाया। सरगुण कहे निरगुण वसे चौदां लोक, निरगुण कहे सरगुण कोटन कोट लोक चरनां हेठ दबाया। सरगुण कहे निरगुण सुणाए सलोक, निरगुण कहे कोटी कोट सलोक सरगुण रहे सालाहिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाया।

सरगुण कहे निरगुण सतिगुर, निरगुण कहे सरगुण गुर गुर रूप वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण लेखा जाणे धुर, निरगुण कहे सरगुण धुर मस्तक लेख समझाइंदा। सरगुण कहे निरगुण चढ़े साचे घोड़, निरगुण कहे सरगुण तेरा प्रेम घोड़ा इक्क वखाइंदा । सरगुण कहे निरगुण जाए बौहड़, निरगुण कहे सरगुण तेरी जुग जुग सेव कमाइंदा। सरगुण कहे

निरगुण आदि जुगादि रिहा दौड़, निरगुण कहे सरगुण सदा सदा आपणी गोद बहाइंदा । सरगुण कहे निरगुण बुझाए औड़, निरगुण कहे सरगुण अमृत मेघ बरसाइंदा। सरगुण कहे निरगुण दो जहानां लाए पौड़, निरगुण कहे सरगुण फड़ बांहों उपर उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण इके घर, घर घर विच्च वेख वखाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण अमीर, निरगुण कहे सरगुण उमराओ उपजाईआ। सरगुण कहे निरगुण पीरे पीर, निरगुण कहे सरगुण पीरी तेरे हत्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण मारे ज़ंजीर, निरगुण कहे सरगुण जगत ज़ंजीर तेरी वस्त वखाईआ। निरगुण सरगुण आदि अन्त जुगाँ जुगन्त खेल अखीर, आखर आपणी खेल वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सच निशान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दो जहान रिहा झुलाईआ। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी वकील सिँघ)

सरगुण कहे निरगुण कार, निरगुण तेरा भेव कोई ना पाइंदा । सरगुण कहे निरगुण तेरा नूर उजिआर, नूर नज़र किसे ना आइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा सचखण्ड दुआर, अंदर वड़ दरस कोई पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा वड भंडार, वड भण्डारी हत्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। सरगुण कहे तेरा भेव न्यारा, अभेद तेरी वडयाईआ । सरगुण कहे निरगुण तूं अगम्म ठठिआरा, घड़न भन्नणहार अखवाईआ । सरगुण कहे निरगुण तेरा सच विहारा, तूं साची सेव कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव दएं अधारा, आपणा बंस सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण तूं सति वरतारा, रजो तमो सतो आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश तत्तव तत्त नाच कराईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा पसारा, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा जैकारा, चारे बाणी दए दुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरी सितारा, चारे खाणी तन्द रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे पाईआ।

सरगुण कहे निरगुण तेरा नूर, नूरो नूर समाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सर्ब कला भरपूर, बेअन्त नाउँ धराइंदा। सरगुण कहे निरगुण आसा मनसा पूर, निराशा रूप ना कोई जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा आदि जुगादि सति सरूप, सच खुमारी इक्क रखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तूं आदि जुगादि हज़ूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण मीत, मित्र प्यारे सच्चे माहीआ। सरगुण कहे निरगुण अतीत, त्रैगुण अतीता आसण लाईआ। सरगुण कहे निरगुण अनडीठ, अनडिठड़ा धाम सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण सुणाए गीत, अक्खर अक्खर कर पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण ठांडा सीत, अगनी तत्त ना कोई रखाईआ। सरगुण कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ।

सरगुण कहे निरगुण सच, घर साचे सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आपणे अंदर गिआ रच, रूप रंग रेख ना कोई जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जोती जोत रिहा

मच्च, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। सरगुण कहे निरगुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण निरँकार, निराकार समाईआ। सरगुण कहे निरगुण दातार, दाता दानी वड वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण भंडार, बण भण्डारी आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण पसार, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। सरगुण कहे निरगुण जीव जंत आधार, घट घट रिहा समाईआ। सरगुण कहे निरगुण नाद शब्द धुनकान, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण इछिआ वेद चार, शास्त्र सिमरत आप सालाहीआ । सरगुण कहे निरगुण पराण पराणी दए आधार, अठ्ठ दस मेल मलाईआ। सरगुण कहे निरगुण शब्द नाद ज्ञान, ज्ञाता गीता इक्क पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण ईमान, अंज़ील कुरान रिहा सुणाईआ। सरगुण कहे नानक नाम निशान, नाम सति सति प्रगटाईआ। सरगुण कहे निरगुण निशान, गोबिन्द सूरा रिहा झुलाईआ। सरगुण कहे लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेड़ा आप वसाईआ।

सरगुण कहे निरगुण अधार, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। सरगुण कहे निरगुण अवतार, जुग जुग वेस वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण सिकदार, गुर गुर रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण प्यार, निरगुण सरगुण संग निभाईआ। सरगुण कहे निरगुण विहार, बण विवहारी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग जुग खेल कराईआ।

सरगुण कहे निरगुण जोग, हरि साचा सच कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण संजोग, सति सतिवादी आप कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण भोग, साचा भोगी भोग भुगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण होद, आदि जुगादि ना कोई मिटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण ओट, दूसर ओट ना कोई तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेड आप कराइंदा।

सरगुण कहे निरगुण आस, आदि अन्त रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण बुझाए प्यास, तृसना रोग मिटाईआ। सरगुण कहे निरगुण वखाए रास, मण्डल मंडप दए वडयाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे प्रकाश, दो जहान जहान रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे पास, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेल तमाश, दीन दुनी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपणे विच्च छुपाईआ।

सरगुण कहे निरगुण जगत, जागरत जोत जगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण भगत, भगवन आपणी बूझ बुझाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सन्त, सति सति अंदर धार वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण कन्त, नर नरायण साची सेजा सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बणाए बणत, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा।

सरगुण कहे निरगुण रहे जुग चार, आदि जुगादि दया कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेले खेल विच्च संसार, रूप अनूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण हर घट पावे सार,

घट घट आसण लाईआ। सरगुण कहे निरगुण गुर अवतार, पीर पैगम्बर रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण अकार, साकार नज़री आईआ। सरगुण कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहाईआ।

सरगुण कहे निरगुण धारा, धरनी धरत धवल चलाइंदा। सरगुण कहे निरगुण पसारा, निरधन सरधन रंग रंगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जैकारा, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण घर बाहरा, घर मन्दर सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तीर्थ तट्ट किनारा, सच सरोवर इक्क वडिआइंदा। सरगुण कहे निरगुण शब्द जैकारा, बोध ज्ञान आप दृढ़ांइंदा। सरगुण कहे निरगुण लिखारा, जुग जुग आपणा लेख लिखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण करे आपणी कारा, करता पुरख नाउँ धराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कमाइंदा।

सरगुण कहे निरगुण उडीक, नित नित आस रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण अतीत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सरगुण कहे निरगुण ठांडा सीत, सीतल धारा इक्क वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण मन्दर मसीत, मट्ठ शिवदवाला नाउँ धराईआ। सरगुण कहे निरगुण अजीत, जितया कदे ना जाईआ। सरगुण कहे निरगुण नज़ीक, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण कोटन कोट काल वेखे ठीक, जुग जुग ठीकरा भन्न वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण बेप्रीत, साची प्रीत ना किसे समझाईआ। सरगुण कहे निरगुण जुग जुग गुर अवतारा कोलों चलौदा रिहा आपणी रीत, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेल कराया धंदे लाया जीव जंत मन्दर मसीत, मुल्लां शेख़ पंडत करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण निरगुण आपणा आप वखाईआ।

सरगुण कहे निरगुण अभुल्ल, भुल्ल कदे ना जाईआ। सरगुण कहे निरगुण अमुल्ल, मुल्ल ना कोई चुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण अतुल, तोलयां तोल ना कोई तुलाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना जाए रुल, एका रंग समाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना जाए हुल, आदि जुगादि रिहा लहराईआ। सरगुण कहे निरगुण जाए आपणी कुल, दूसर भेव कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सरगुण बैठा सीस झुकाईआ।

सरगुण मंगे दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। किरपा कर श्री भगवान, हउँ एका मंग मंगाया। तूं खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेस वटाया। तूं लक्ख चुरासी कर प्रधान, घर घर जोत जगाया। तूं गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे दान, आपणा नाम पढ़ाईआ। तूं काया मन्दर कर परवान, आत्म सेजा आसण लाया। तूं शब्द अनादी सच फ़रमाण, धुरदरगाही आप सुणाया । हउँ बाला बाल नादान, तेरा अन्त कोई ना आया। तूं भाण्डे घड़ें चतर सुघड़ सुजान, विच्च आपणी वस्त टिकाया। अन्त मेटें जगत निशान, थिर कोई रहण ना पाया। आपणा दस्स भेव श्री भगवान, एह की खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाया।

घड़न भन्नण दी मेरी कार, मैं आपणा खेल खिलाईआ। कदे थथवा फड़ बणां घुमिआर,

कदे ठीकर फोड़ वरवाईआ। कदे विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण माया बंधन पाईआ। कदे लक्ख चुरासी कर उजिआर, घट घट जोत जगाईआ। कदे गुर पीर धर अवतार, धरनी धरत धवल दिआं वडयाईआ। कदे भगतन देवां इक्क अधार, साची भगती नाम पढ़ाईआ। कदे जल थल महीअल डूंघी कंदर वेखां गार, कदे उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाईआ। कदे वंडां वंड जुग जुग चार, चार चार बंधन पाईआ। कदे सभ नूं करां खुआर, आपणा बल रखवाईआ। निरगुण नूर नूर उजिआर, दो जहान मेरी रुशनाईआ। सरगुण रहणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। पिच्छे आउँदा रिहा सरगुण रूप जामा धार, जगत नाता कर कुड़माईआ। कोई कहे राम अवतार, जनक सपुत्री गिआ परनाईआ। कोई कहे कृष्न मुरार, राधा आपणी गोद बहाईआ। कोई कहे मुहम्मद यार, यारी यारां नाल निभाईआ। कोई कहे नानक निरगुण धार, पुत्र धीआं गिआ तजाईआ। कोई कहे गोबिन्द सरदार, बाले नीहां हेठ दबाईआ। कोई कहे लेखा वेद चार, कोई कहे पुरान पढ़ाईआ। कोई कहे गीता ज्ञान, बिन गीता हत्थ किसे ना आईआ। कोई कहे अञ्जील कुरान, आला मरतबा रहे समझाईआ। कोई कहे खाणी बाणी प्रधान, नानक अरजन करी पढ़ाईआ। श्री भगवान कहे मैं सभ दा मेटां निशान, अन्तम आपणे विच्च समाईआ। कलिजुग निरगुण हो के आया विच्च जहान, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। ना कोई नारी दिसे सन्तान, पिता पूत ना कोई वडयाईआ। इक्को नाता विच्च जहान, जन भगतां नाल लिआ जुड़ाईआ। अंदर वड़ के वसां सच मकान, सच दुआरे आसण लाईआ। दिस ना आए किसे श्री भगवान, जगत लोकाई रही कुरलाईआ। हरिजन हरि जू मिल्या आण, आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक निरगुण निरगुण रिहा उठाईआ। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी धंगाली लछमण सिँघ)

निरगुण कहे श्री भगवान, सरगुण देवां माण वडयाईआ। तत्तव तत्त कर प्रधान, हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्म तत्त इक्क वखाण, नूर नूर नूर दरसाईआ। घट घट कर पछाण, आपणी बूझ बुझाईआ। लोकमात सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। जुग चौकड़ी वंड वंडान, गेड़ा गेड़े विच्च भवाईआ। गुर अवतार खेल महान, पीर पैगम्बर नाल रलाईआ। सति सतिवादी सारे पाण, साची सिख्या इक्क समझाईआ। बोध अगाधी शब्द महिमान, जुग जुग फेरा पाईआ। करे खेल ख़लक महान, हरि ख़ालक बेपरवाहीआ। रहमत करे रहीम रैहमान रैहम आपणा आप कमाईआ। सरगुण देवे साचा माण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। नाम निधाना तीर कमान, साचा चिल्ला इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण सार आपे पाईआ।

सरगुण तेरी पावे सार, निरगुण दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेख विचार, सगला संग निभाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग अन्तम खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण करे प्यार, निरगुण नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण दाता देवणहार, निरगुण झोली आप भराइंदा। निरगुण अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, निरगुण सच प्याला आप प्याइंदा। निरगुण एकँकार इक्क इकांता सचखण्ड वसे सच दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणा आप वडिआइंदा।

सरगुण तेरा साचा रंग, निरगुण निरगुण आप चढ़ाईआ। सरगुण तेरी जगत सेज पलँघ,

निरगुण निरगुण आप हंढ्ढाईआ। सरगुण तेरा नाम मरदंग, निरगुण तार सितार बिन आप वजाईआ। सरगुण तेरे वसे संग, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाईआ।

सरगुण तेरा मुक्के पन्ध, निरगुण आप मुकाइंदा। सरगुण तेरा साहिब सदा बख्शंद, जुग जुग दया कमाइंदा। सरगुण टुट्टी देवे गंढु, निरगुण आपणी गंढु पवाइंदा। सरगुण तेरा गीत सुहागी छन्द, निरगुण आपणा नाउँ समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाइंदा।

सरगुण तेरा जगत महल्ला, निरगुण आपणी बूझ बुझाईआ। निराकार फड़ाए एका पल्ला, एका हत्थ वखाईआ। जोती शब्दी अनभव धार रला, रूप रंग रेख ना कोई वडयाईआ। सच संदेस एको घल्ला, एका करे पढ़ाईआ। वसणहारा निहचल धाम अट्टला, सरगुण तेरे अंदर डेरा लाईआ। दीपक जोती आपे बला, तेल बाती ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणा रंग चढ़ाईआ।

सरगुण रंग दए चढ़ा, निरगुण आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जुग जुग पान्धी पन्ध दए मुका, कलिजुग अन्तम फेरा पाईआ। सूरा सर्बंग वेस वटा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। सरगुण तेरा निरगुण मरदंग दए वजा, आपणी सेवा आप कमाईआ। दूई द्वैती हउमे हंगता झूठी कंध दए ढाह, एका ठोकर नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वडयाईआ।

सरगुण देवे सच सहारा, निरगुण दया कमाइंदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़ा, आपणा भेव चुकाइंदा। वाह ना लग्गी तत्ती विच्च संसारा, अगनी तत्त बुझाइंदा। एका देवे नाम अधारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। एका मन्दर इक्क घर बाहरा, एका बंक सुहाइंदा।

एका गुर इक्क अवतारा, एका शब्दी शब्द पढ़ाइंदा। एका राग नाद जैकारा, एका धुनी धुन समाइंदा। एका वसे सभ तो बाहरा, निरगुण खेल कराइंदा। सरगुण तेरा मीत मुरारा, दर तेरे फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा खेल वखाइंदा।

निरगुण सरगुण उपर पए तुठ, मेहरवान दया कमाईआ। एका अमृत देवे घुट्ट, अंमिउँ रस आप चखाईआ। बाल नादाना पए उठ, आपणा बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा सदा सहाईआ।

तेरा सहाई सदा सद सज्जण, हरि सच्चा आप अखवाइंदा। जुग जुग कराए एका मज़न, चरन धुड़ी टिक्का लाइंदा। सज्जण सुहेला होया परदे कज्जण, सच दुशाला उपर पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा संग निभाइंदा।

सरगुण तेरा सगला संग, सो पुरख निरञ्जण आप निभाईआ। गृह गृह घर घर चाढ़े चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, निज़ानंद दरसाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, सोहँ ढोला गाईआ। जन्म जन्म जग मुक्के पन्ध, लक्ख चुरासी रहण ना पाईआ। नाता तुटे जेरज अंड, ब्रह्मण्ड ना वेख वखाईआ। होए वसेरा सचखण्ड, अन्त जोती मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाईआ।

सरगुण निरगुण रक्खे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जुगाँ जुगन्तर सुण फ़रयाद, जन भगतां होए सहाईआ। एका नाम देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए काढ, आप आपणा मेल वखाईआ। निरगुण सरगुण करे लाड, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ।

जुग जुग वेस अव्वलड़ा, निरगुण सरगुण धार। हरिजन फड़ाए पलड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। वसणहारा निहचल धाम अचलड़ा, लोकमात होए उजिआर। सच संदेसा एका घलड़ा, शब्दी शब्द शब्द जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए दीदार।

निरगुण सरगुण देवे दरस, आपणी बूझ बुझाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हिरस अवर ना कोई वधाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अगनी तत्त बुझाईआ । जन भगतां उपर कर कर तरस, आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों परख, नाम कसवटी एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता दुःख ना कोई वखाईआ।

सरगुण तेरा निरगुण सहारा, सदा सदा अखवाईआ। कलिजुग अन्तम वेख किनारा, जोती जामा भेख वटाईआ। जुग जुग दे विछड़े मेले मेलणहारा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण बंधन एका पाईआ।

निरगुण सरगुण साचा बंधन, पुरख बिधाता आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण लगाए चन्दन, तिलक लिलाटी जोत जगाइंदा। निरगुण सरगुण तोड़े फंदन, फांदी अवर ना कोई वखाइंदा। निरगुण सरगुण खेले खेल मुकन्द मनोहर मुकन्दन, कँवल नैण नैण मटकाइंदा। निरगुण सरगुण त्रिलोकी नंदन, नंद जशोधा माण दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा।

निरगुण सरगुण सच वैराग, हरि वैरागी आप उपाईआ। निरगुण सरगुण खोल्हे जाग, नेत्र नैण इक्क दरसाईआ। निरगुण सरगुण अंदर लाए भाग, आपणे आसण सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण जगाए चिराग़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण सरगुण धोवे दाग़, दुरमत मैल रहण ना पाईआ। निरगुण सरगुण सच्चा काज, घर घर विच्च आप वखाईआ। निरगुण सरगुण रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। निरगुण सरगुण मारे अवाज़, शब्द अगम्मी तार हिलाईआ। निरगुण सरगुण ग़रीब निवाज़, बण निमाणा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अव्वलड़ा आप वटाईआ।

निरगुण सरगुण वेस अव्वला, भेव कोई ना पाइंदा । निरगुण सरगुण इक्क इकल्ला, लक्ख चुरासी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण वसणहारा सच महल्ला, सोभावन्त दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा आप कराइंदा। निरगुण सरगुण करे किरत, वड किरती किरत कमाईआ। निरगुण सरगुण दो जहानी फिरत, फिर फिर वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण मेटे हरस, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण होए सहाईआ।

निरगुण नूर श्री भगवान, आदि जुगादि समाया। सरगुण वेखे विच्च जहान, लोकमात फेरा पाया। साचे भगत करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। सन्तन देवे एको माण,

दर दुआर सुहाया। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, आपणा रंग रंगाया । गुरसिखां देवे इक्क ज्ञान, एका मंत्र नाम दृढ़ाया। एका इष्ट श्री भगवान, एका मन्दर डेरा लाया। सरगुण सदा करे परनाम, निउँ निउँ सीस झुकाया। निरगुण जणाए आपणी कलाम, कलमा कायनात सुणाया। सरगुण निउँ निउँ करे सलाम, सजदा सीस वखाया। निरगुण सद सद दए पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप पढ़ाया। सरगुण सुणे धुर फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा खेल रचाया।

निरगुण निराकार श्री भगवन्त, महिमा अकथ्थ कथी ना जाईआ। सरगुण गुरमुख मेला नारी कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, जूठ झूठ दए मिटाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरि सज्जण आप कराईआ। मानस जन्म ना होए भंगत, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। एथ्थे ओथ्थे सच वखाए साची जन्नत, चरन सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ।

हरिजन सच्चा सरगुण धार, निरगुण मेल मिलाया। बण विचोला एकँकार, आपणा बंधन पाया। नाता तोड़ सर्ब संसार, साचा मार्ग इक्क वखाया। सुरती शब्दी करे प्यार, शब्द सुरत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण निरगुण रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बांह आपे फड़, आपणे नाल मिलाया। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी ज्ञान चन्द)

निरगुण घर निरगुण वासा, सरगुण बंधन पाईआ। निरगुण अंदर निरगुण धरवासा, सरगुण आस तकाईआ। निरगुण अंदर निरगुण तमाशा, सरगुण खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज लीला आप रचाईआ।

निरगुण सतिगुर गुर गुर धार, सरगुण रंग वटाईआ। नूरो नूर अगम्म अपार, अनभव प्रकाश कराईआ। बोध अगाध शब्द धुनकार, अनादी नाद सुणाईआ। नाता जोड़ गुर अवतार, लोकमात बंधन पाईआ। नेत्र लोचन खोलु किवाड़, प्रतक्ख रूप दरसाईआ। घर मन्दर कर त्यार, श्री भगवन्त सोभा पाईआ। आत्म अन्तम दे दीदार, तृसना भुक्ख गवाईआ। सरगुण निरगुण कर प्यार, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा सदा सदा होए सहाईआ।

निरगुण सरगुण सच वसेरा, घर घर विच्च मेल मिलाइंदा। पन्ध मुकाए नेरन नेरा, दूर दुराडा मोह चुकाइंदा। इक्क वसाए साचा खेड़ा, पंज तत्त चोला आप हंढ़ाइंदा। खुल्ला रक्खे हरि जू वेहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा संग मिलाइंदा। निरगुण सतिगुर मेहरवान, सरगुण दए वडयाईआ। गुर गुर रूप हो प्रधान, तत्तव तत्त समाईआ। सति सतिवादी खोलु दुकान, नाम हट्ट वणजारा एका एक वजाईआ। लोकमात हो प्रधान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जन भगतां देवे दान, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या कर पढ़ाईआ। नाता तोड़ पंज शैतान, पंचम नाद शब्द धुंन शनवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण वेखे चाईं चाईआ।

निरगुण सरगुण सदा दयाल, सरगुण दया कमाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ ज़ंजाल, आपणा

बंधन पाइंदा। पंज तत्त अंदर सच्ची धर्मसाल, घर विच्च घर आप सुहाइंदा। दीपक जोती एका बाल, अंज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। एका राग सुणाए कान, शब्दी शब्दी धुंन उपजाइंदा। आत्म परमात्म कर पहचान, पुरख बिधाता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण खेड़ा आप वसाइंदा।

निरगुण दाता गहर गम्भीर, सरगुण दए वडयाईआ। पंज तत्त काया सांत सरीर, सांतक सति सति वरताईआ। सति सन्तोखी देवे धीर, एका तत्त जणाईआ। बजर कपाटी पड़दा चीर, रूप अनूप दरसाईआ। अमृत बख्शे ठंडा सीर, निझर झिरना आप झिराईआ । चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ। निरगुण सतिगुर सच्चा पीर, मुरीद मुशर्द लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सरगुण बेड़ा बंन्न चलाईआ।

निरगुण सतिगुर पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। सरगुण चलाए तेरा रथ, जुग जुग वेस वटाया। नाम जणाए महिमा अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राया। जिस जन देवे साची वथ, वस्त अमोलक झोली पाया। सो सरन सरनाई जाए ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाया । लहणा देणा चुक्के सीआ सढ्ढे त्रै त्रै हत्थ, मानस जन्म लेखे लाया। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां हरिजन तेरा गाए जस, जस वेद पुरान भेव ना आया । जन भगतां पूरी करे आस, नित नवित्त वेस वटाया। खेले खेल पृथ्मी अकाश, गगन मण्डल फेरा पाया। कलिजुग अन्तम निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जामा वेस वटाया। हरिजन वसे सदा पास, सगला संग निभाया। गुरमुखां बण बण दासी दास, सेवक आपणी सेव कमाया । काया मन्दर मन्दर पावे रास, गोपी काहन आप नचाया। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जुग विछड़े लए मिलाया। लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासी डेरा लाया। अन्तम करे बन्द खुलास, राए धर्म ना दए सजाया । निरगुण मेला शाहो शाबाश, सरगुण आपणे अंग रखवाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गुर चेला रूप वटाया। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी नवां चक्क दौलत सिँघ)

सरगुण अंदर निरगुण लुक, लुकवीं खेल खलाइंदा। जिस जन पर्दा लए चुक्क, तिस जन नज़री आइंदा। अंदरे अंदर पए उठ, आपणा दरस दिखाइंदा। सरगुण उत्ते निरगुण गिआ तुठ, निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख जाणे साचा सुत, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। बाहरों दिसे पंज तत्त काया बुत्त, अंदर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा आसण लाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुहाई रुत, फुल फलवाड़ी आप महकाइंदा। जिस ने सवाल कीता उठ, तिस जन आप समझाइंदा।

निरगुण सरगुण साध संगत, गुरमुख मेल मिलाईआ। अंदर चढ़े नाम रंगत, बाहर काया माटी ख़ाक दसाईआ। अद्धे बैठे नाम मंगत, अद्धे बैठे खेल खलाईआ। जिस जन प्रभ मिलण दी बणे बणत, तिस मेले सच्चा शहनशाहीआ। सरगुण बैठी साध संगत, निरगुण अंदरे अंदर खेल खलाईआ। सरगुण दिसे पंज तत्त चोला, जो जन दवारे नज़री आइंदा। निरगुण अन्तर रक्खया उहला, रूप रंग रेख ना कोई वखाइंदा। आपणा आप जीव ना जाणे मेरे अंदर कवण बोला, कवण कूटे आसण लाइंदा। कवण मां पिउ भैण भरा साक

सज्जण गाए ढोला, रसना जिह्वा कवण हिलाइंदा। कवण कवण जूठ झूठ पावण रौला, कवण सच सुच्च जणाइंदा। कवण चलाए उपर धौला, कवण कूटो कूट फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कर, संगत अंदर हरि जू वड़, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा ।

सरगुण संगत हरि हरि जोत, निरवैर निरवैर निरवैर आप रखाईआ। काया बणया किला कोट, अंदर लुकया बेपरवाहीआ । जिस जन कढ्ढु हउमे खोट, तिस आपणा आप बुझाईआ। घर तन नगारे लगाए चोट, एका डंका नाम वजाईआ। अंदर जगाए निर्मल जोत, अंदर वसणहारा फेर नज़री आईआ। झगड़न वाले बहुत, नाम पकड़न वाला विरला गुरमुख गुरसिख मिले सच्चे माहीआ। बाहरों दिसदे हिलदे होठ, अंदर हलौण वाला दिस किसे ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत देवे माण वडयाईआ। अद्धे रक्खण सतिगुर आस, दिवस रैण घ्याईआ। अद्धे होए मन के दास, मन वासना फिरे भजाईआ। अद्धे जपण रसन स्वास स्वास, अद्धे गालीआं रहे कढ्ढाईआ। अद्धयां करके जाणी आपणी बन्द खुलास, अद्धे ख़ाली हत्थ भवाईआ। अद्धयां वसे सदा पास, अद्धे निरास रोवण मारन धाहींआ। सतिगुर नज़र ना आए पृथ्मी आकाश, जो जन बैठे मुख भवाईआ। तिन्नां सतिगुर वसे पास, जो हरि सतिगुर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एथ्थे उथ्थे करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, मंगणहारी सर्ब लोकाईआ।

अद्धे मंगण शब्द घनघोर, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। अद्धे रातीं उठ उठ फिरदे चोर, लुट्ट लुट्ट जीवां रहे सताईआ। अद्धे चढ़दे नाम घोड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। अद्धे आपणा आप रहे रोड़, विषे विकारा वक्त गवाईआ। सतिगुर पूरे दी सदा लोड़, बिन सतिगुर पार ना कोई कराईआ। निरगुण सरगुण तेरी आपणे हत्थ रक्खी डोर, जिध्धर चाहे रिहा भवाईआ। गुर अवतारां आपणे हुक्मे देवे तोर, अन्तम आपणे विच्च लए मिलाईआ। बिन बूझे जीव पावे शोर, समझ समझ विच्च ना आईआ। अद्धे मंगदे कुछ होर, अद्धे मंगदे कुछ होर, देवणहारे घर कोई ना थोड़, जो मंगे सो वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख मनमुख मनमुख गुरमुख दोवें राह चलाईआ। निरगुण सुणे निरगुण सुणाए, सरगुण निरगुण आपणी धार रखाइंदा । निरगुण बोले निरगुण गाए, निरगुण आपणी झोली पाइंदा। निरगुण बह बह खुशी मनाए, निरगुण आपणे रंग समाइंदा। सरगुण चोला पर्दा पाए, काया माटी हट वखाइंदा । बिन निरगुण सरगुण रहण ना पाए, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक वखाइंदा । सरगुण अंदरों निरगुण आपणा बाहर कढाए, पवण स्वास ना कोई चलाइंदा। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण सभ करे हाए हाए, सरगुण अंदर निरगुण नज़र ना आइंदा। बिन निरगुण सरगुण किसे ना थाए, सरगुण निरगुण बिना ना सोभा पाइंदा। जिस सरगुण अंदर निरगुण डेरा लाए, सो सरगुण लोकमात बूझ बुझाइंदा। (१०-६६२)

शब्द गुरू नाता नाल देह, देह शब्द गुरू अखवाईआ। निरगुण सरगुण लग्गे नेंह, दो जहान वज्जे वधाईआ। जिस वेले तन माटी हो जाए खेह, मड़ी गोर विच्च समाईआ। सतिगुर

शब्द फेर वी भगतां उत्ते बरख आपणा मेंह, मेघ अमृत आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देह शब्द जोत मिल के आपणी कार कमाईआ। (१६-६४३)

सरगुण तेरा घाड़न घड़, हरि निरगुण खेल खिलाया। निरगुण अंदर बैठा वड़, आपणा मुख छुपाया। साचे पौड़े गिआ चढ़, साचा मन्दर इक्क सुहाया। निशअक्खर बाणी रिहा पढ़, बोध अगाध समझाया। दरस दिखाए अग्गे खड़, नेत्र ज्ञान इक्क खुल्ह़ाया। अमृत नुहाए साचे सर, सरोवर इक्को इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा खेल कराया।

सरगुण तेरा जोड़ जुड़ा, हरि अचरज बणत बणाईआ। निरगुण अंदर डेरा ला, आपणा आसण रिहा सुहाईआ। निर्मल दीप जोत जगा, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ। एका नाद दए वजा, धुन अनादी नाद सुणाईआ। साचा सोहला आपे गा, एका करे पढ़ाईआ। आत्म सेजा दए सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा रंग वखाईआ। सरगुण तेरा लेखा पंज तत्त, हरि तत्तव तत्त रखाइंदा। तेरे अंदर खेल समरथ, हरि आपणी खेल कराइंदा। नाम अनमुल्ली रक्खे वथ, साचे हट्ट विकाइंदा। घर सरोवर वखाए तट्ट, तट्ट किनारा आप बणाइंदा। घर दीपक जोत लट लट, नूर नूराना डगमगाइंदा। घर निरगुण होए प्रगट, सरगुण माण वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा रंग महल्ल इक्क सुहाइंदा।

सरगुण तेरा सच मुनारा, हरि तत्तव तत्त उपाईआ। अंदर वड़ हरि निरँकारा, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। खेल खेल अगम्म अपारा, खेलणहारा दिस ना आईआ। आदि जुगादी साची कारा, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार दे सहारा, एका ओट जणाईआ। एका नाम सति वरतारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण भंडारा इक्क वखाईआ।

सरगुण तेरे अंदर भंडार, निरगुण आपणा आप टिकाइंदा। जुग जुग बणे मात वरतार, गुर गुर रूप वटाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा भंडार इक्क समझाइंदा।

सरगुण तेरे अंदर वस्त अनमोल, निरगुण आपणी आप रखाईआ। आपणा पड़दा लैणा खोल्ह़, घर वेखणा चाईं चाईंआ। लोकमात ना रहणा अनभोल, भुल्ल रुल ना जन्म गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल काया चोल, चोली काया इक्क समझाईआ। सरगुण तेरे अंदर वस्त अतुट, अतोट हरि रखाइंदा। तूं आपणा पड़दा वेख चुक, सतिगुर साचा सच समझाइंदा। दरस दिखाए जो बैठा लुक, नेत्र नैणां नाल मिलाइंदा। पंच विकारा जड़ देवे पुट्ट, सच सुच्च इक्क जणाइंदा। नाम प्याला देवे घुट्ट, मधुर जाम हत्थ रखाइंदा। आवण जावण जाए छुट्ट, सरगुण निरगुण विच्च समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा बंधन आप तुड़ाइंदा।

सरगुण तेरा सच दुआरा, हरि साचा सोभा पाइंदा। जुग जुग खेल करे निरँकार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वेखणहारा, रूप अनूप वखाइंदा। कलिजुग

अन्तम हो उजिआरा, जोती जामा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी लै भंडारा, निरगुण लोकमात फेरा पाइंदा। साचा हट्ट खोलू वणजारा, साची वस्त विच्च टिकाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यारा, प्रेम सिख्या इक्क समझाइंदा। सन्तां देवे इक्क हुलारा, साची जोती आप मिलाइंदा। गुरमुखां खोलू बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लाहिंदा। गुरसिखां देवे दरस दीदारा, निझ आत्म मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, हरि ख़ालक ख़लक वखाइंदा। बेऐब वेखे परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा पन्ध मुकाइंदा।

सरगुण तेरा मुक्के पन्ध, निरगुण आप मुकाईआ। एका गीत गौणा छन्द, सोहँ रिहा समझाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। दीन दयाल ठाकर सदा बख्शंद, स्वामी सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सरगुण तेरी नंगी ना होवे कंड, निरगुण आपणा पड़दा पाईआ। तेरा विकारा करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। तेरा नाता पार कराए ब्रह्मण्ड, इंड पिण्ड ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वडयाईआ।

सरगुण रूप गुर गुर धार, पंचम पंच समाया। सरगुण रूप भगत आधार, भगवन भगती एका लाया। सरगुण रूप सन्त संसार, निरगुण आपणा रंग चढ़ाया। सरगुण गुरमुख खेल अपार, काया चोली भेव छुपाया। सरगुण गुरसिख कर त्यार, निरगुण सरगुण वेख वखाया। कलिजुग अन्तम खेल अपार, निराकार आप कराया। गुरमुख साचे कर प्यार, त्रैगुण अतीता मेल मिलाया। ठांडा सीता इक्क दरबार, दर दरवाज़ा दए खुलाया। जन्म जन्म दे विछड़े मेले यार, तुट्टी गंढु पवाया। लक्ख चुरासी पार किनार, राए धर्म ना दए सजाया। काल महांकाल रोवे नेत्र ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। जिस मिल्या आप निरँकार, तिस माया पोह ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, हरिजन साचे आप मिलाया।

हरिजन हरि जू मिल्या आण, आपणी दया कमाईआ। शब्द संदेसा धुर फ़रमाण, अगम्मी नाद सुणाईआ। पंज शब्द होए हैरान, प्रभ अचरज खेल वखाईआ। साड्डी करे ना कोई पहचान, पड़दा सके ना कोई उठाईआ। असीं बन्द होए पंज तत्त काया मकान, काया मकबरा इक्क बणाईआ। हरिजू सच संदेसा लै के आया सच निशान, सच निशाना दए वखाईआ। साड्डे उपर सेज महान, सो पुरख निरञ्जण आप लगाईआ। आत्म परमात्म वेखे मार ध्यान, जोती जोत कर रुशनाईआ। कलिजुग अन्तम प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, साचा मार्ग रिहा चलाया। एका वार देवे ब्रह्म ज्ञान, जिस जन आपणा दरस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण सज्जण लए फड़, निरगुण दाता अंदर वड़, अंदर बाहर भीतर आपणा रंग वखाईआ।

अंदर बाहर इक्को रंग, निरगुण सरगुण आप रंगाइंदा। गुरमुख मेला सूरे सर्बंग, गुर गुर गोद उठाइंदा। नाद अनादी इक्क मरदंग, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर मन्दर आप सुहाइंदा। साचा मन्दर सतिगुर चरन, दूसर अवर ना कोई वडयाईआ। नेत्र खुलू हरन फरन, द्वैती पड़दा दए उठाईआ। नाता तुटे मरन डरन, जीवण मुक्त कराईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता

इक्क वखाए साची सरन, सरनगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, हरिजन साचे आपणा संग निभाईआ।

सगला संग हरिजू साथा, विछड़ कदे ना जाइंदा। जन भगतां देवे इक्को दाता, नाम अमोलक झोली पाइंदा। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा सतिगुर चन्द चढ़ाइंदा। चरन कँवल इक्को नाता, पुरख बिधाता आप बंधाइंदा। काया मन्दर अंदर बह बह गाए गाथा, आपणी सिफ्त सुणाइंदा। सर्ब कल आपे समराथा, दूसर ओट ना कोई तकाइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस जन दरस दिखाइंदा। अग्गे नेड़े रक्खे वाटा, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। खेले खेल बाज़ीगर नाटा, सवांगी आपणा सवांग रचाइंदा। कलिजुगअन्त वेखण आया तमाशा, लक्ख चुरासी नाच नचाइंदा। हरिजन तेरे दरस प्यासा, दर दर घर घर फेरी पाइंदा। निझ आत्म परमात्म कर कर वासा, झूठी वासना बाहर कढाइंदा। लेखे लाए पवण स्वासा, सोहँ अजपा जाप जपाइंदा। चरन कँवल सच भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कर, जन भगतां देवे नाम दिलासा। (१६ माघ २०१८ बिक्रमी पूरन चन्द)

पंज तत्त मेला हरि निरँकार, सरगुण निरगुण दया कमाइंदा । पंज तत्त अंदर सतिगुर धार, गुर गुर शब्द अलाइंदा। पंज तत्त अंदर जोत निरँकार, जोती जोत डगमगाइंदा। पंज तत्त अंदर अमृत ठंडा ठार, सच सरोवर इक्क भराइंदा। पंज तत्त अंदर सूरज चन्द करन निमस्कार, मण्डल मंडप सीस झुकाइंदा। पंज तत्त अंदर विष्न ब्रह्मा शिव चरन धूढ़ी मंगण छार, सीस जगदीस राह तकाइंदा। पंज तत्त अंदर सच गुफ्तार, गुफ्त शनीद आप समझाइंदा। पंज तत्त गुर अवतार, पीर पैगम्बर रूप वटाइंदा। पंज तत्त अंदर धुर फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा । पंज तत्त अंदर नाम ज्ञान, सच ज्ञाना इक्क दृढ़ांइंदा। पंज तत्त अंदर खेल महान, ख़ालक ख़लक आप खलाइंदा। पंज तत्त अंदर चार जुग दी वेखे आण, चारे खाणी चारे बाणी बाण लगाइंदा । पंज तत्त अंदर हरि का मकान, नानक निरगुण सिफ्त सलाहिंदा । पंज तत्त अंदर नानक अञ्जण देवे दान, आपणी भिच्छया झोली पाइंदा । पंज तत्त अंदर अमरदास कराए इशनान, अमरापद इक्क वखाइंदा । पंज तत्त अंदर रामदास करे ध्यान, वड ध्यानी मेल मिलाइंदा । पंज तत्त अंदर गुरू अरजन धुर बाणी लाए बाण, पुरख अबिनाशी एका पाइंदा। पंज तत्त अंदर गुरू ग्रन्थ गुरदेव बणाया विच्च जहान, चार वरन अठारां बरन जीव जंत सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अंदर तीर कमान, हरि गोबिन्द खण्डा खड़ग हत्थ उठाइंदा । पंज तत्त अंदर हरराए दए ब्यान, लिख लिख लेख सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अंदर हरिकृष्ना छोटे बाले दए ज्ञान, गूंगयां ज्ञान आप समझाइंदा। पंज तत्त अंदर गुर तेग बहादर झुलाया सच निशान, पंज तत्त आपणा भेट चढ़ाइंदा। पंज तत्त अंदर गोबिन्द सूरा प्रगटया आप बलवान, पुरख अकाल आपणा सुत बणाइंदा। पंज तत्त अंदर पंज प्यारे कर परवान, धुर फ़रमाणा हत्थ फड़ाइंदा। पंज तत्त अंदर गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, पुरख अबिनाशी अग्गे झोली डाहिंदा। पंज तत्त अंदर नानक गोबिन्द दे दे गिआ ज्ञान, अक्खर अक्खर जगत समझाइंदा । पंज तत्त अंदर सूरबीर सुल्तान दस्स के गिआ निशान, सच निशाना इक्क लगाइंदा। पंज तत्त सम्बल घर बणे मकान,

साढ्ढे तिन्न हत्थ वंड वंडाइंदा। पंज तत्त निरगुण वेस करे श्री भगवान, पंज तत्त आपणे उपर पड़दा पाइंदा। पंज तत्त अंदर गोबिन्द खण्डा चमके दो जहान, नाम खण्डा इक्क उठाइंदा। पंज तत्त अंदर धुर फ़रमाण, पुरख अबिनाशी जुग जुग आप सुणाइंदा। बिनां पंज तत्त हरि जू किसे ना दस्से आपणा नाम, आपणी इच्छया खातर पंज तत्त आपणा डेरा लाइंदा। कलिजुग अन्तम खेल महान, भेव कोई ना पाइंदा। जिस काया अंदर वसे आप मेहरवान, तिस उपर मेहर नज़र आप टिकाइंदा। जे कोई आ के मथ्था टेके उहनूं नज़री आए विष्नूं भगवान, पूरन सिँघ पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। एह झूठी माटी खेल जहान, जगत खेड़ा आप वसाइंदा। जिस ने मिलणा सतिगुर पूरे जाणी जाण, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। राती सुत्तयां गुरसिखां अग्गे खलोवे आण, गोबिन्द आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तम भरम भुलेखे विच्च आप भुल्ल गिआ भगवान, आपणा जोती जामा पाइंदा। जगत नेत्र दिसे ना शाह सुल्तान, आत्म परमात्म नेत्र खेतर ना कोई खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आदि जुगादि सदा सद समाइंदा। (१० ६८०—६८१)

तारनहारा आ गिआ, निरगुण जोत कर उजिआर। नाउँ निरँकारा आपणा नाउँ रखा लया, निरगुण रूप अपर अपार। सतिजुग साचा मार्ग ला लया, चार वरनां इक्क आधार। हँ ब्रह्म मेल मिला लया, पारब्रह्म करे प्यार। पंज तत्त काया नाउँ ना कोई वड्डिआ लिआ, निरगुण नाउँ होए जैकार। सरगुण तेरा पन्ध मुका लया, लेखा चुक्कया गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि,आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे साचा वर, तरनी तरन आप करतार। (१०—४०)

सतिगुर शब्द कहे गुरमुखो तत्तां दे कदे ना बणओ पुजारी, पूजा कम्म किसे ना आईआ। जद मन्नो ते मन्नो जोत निरँकारी, जो घट घट रिहा समाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बरां सिफ्तां विच्च सिफ्त लिखी भारी, भारत वरश दए गवाहीआ। पर सतारां हाढ़ कहे अज्ज उह दिहाढ़ी, जिस दा राह चार जुग रहे तकाईआ। पंजे प्यारे ख़बरदार हो जाओ एस नूं कर लउ गिरफ्तारी, जेहड़ा गिफ्ट विच्च नाम कलमे दे के सभ नूं दए परचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । (२१—१०४१)

सरगुण तेरा साचा राग, निरगुण नाम वडयाईआ। सरगुण तेरा सच सुहाग, हरि कन्त कन्तूहल अखवाईआ। सरगुण तेरा सच समाज, हरि संगत मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाईआ।

साचा मार्ग विच्च संसार, निरगुण सरगुण आप चलाइंदा। गुरमुख सज्जण कर त्यार, आपणी बूझ बुझाइंदा। काया हट्ट खोलू किवाड़, वस्त अनमुल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा।

सरगुण तेरा साचा रूप, एका एक जणाईआ। पुरख अबिनाशी शाहो भूप, देवे नाम वडयाईआ। तेरा नगारा जगत कूट, दह दिशा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा बंधन पाईआ।

सरगुण तेरा सच्चा रूप, गुरमुख गुर गुर आप सलाहिंदा। जन्म जन्म मिटे दुःख, दर्दी दर्द वंडाइंदा। आप उठाए आपणी कुक्ख, साची गोद बहाइन्दा । झूठी मेटे तृसना भुक्ख, सांतक सति कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि मेल मिलाइंदा।

सरगुण तेरा रूप गुरसिख, गुर गुर बूझ बुझाईआ। सच दुआरिउँ मिले भिख, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। पूरब जन्म दी मेटे रेख, अग्गे लेखा दए समझाईआ। नेत्र लोचण साचे वेख, आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। ..... (१६ माघ २०१८ बिक्रमी मलक कैंप)

निरगुण शब्द बिबान, भेव ना भेदया। निरगुण खेल महान, अछल अछेदया। निरगुण पद निरबान, लेख ना जाणे वेद कितेबया। निरगुण गुण निधान, जाणे गुण ना रसना जिहवया । निरगुण खेल दो जहान, भेव ना पाइण देवी देवया। निरगुण आप भगवान, आप आपणा आपे सेवया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए अलख अभेवया। निरगुण रूप अनरंग राता, हरि हरि आप अखवाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, पूरन जोत समाया। दिवस रैण इक्क इकांता, एका धाम सुहाया। ना कोई पिता ना कोई माता, भैण भराता ना कोई जणाया। ना कोई जात ना कोई पाता, ग्रंथ पन्थ ना कोई रखवाया। सर्ब जीआं प्रभ आपे दाता, आप आपणा रिहा जणाया। जुग जुग जाणे आपणी गाथा, गावणहार आप अखवाया। शब्द चलाए साचा राथा, रथ रथवाही हरि रघुराया। भगत जनां हरि सगला साथा, साचा संग निभाया । लहण देण चुकाए मस्तक माथा, धुर मस्तक लेख लिखाया। लेख चुकाए अठ्ठ साठा, तिन्न सौ सट्ठ वेख वखाया। सर सरोवर मारे ठाठां, हरि अमृत जल भराया। एका मंत्र पूजा पाठा, एका नाम दृढ़ाया। जुग जुग गेड़े उलटी लाठा, गेड़नहार आप अखवाया। सर्ब कल आपे समराथा, सति पुरख निरञ्जण आया। वेख वखाए रामा घर दसराथा, रावण लंका गढ़ तुड़ाया। काहना कृष्ना सगला साथा, त्रैलोकी नाथ आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप समाया। निरगुण हरि निरँकार, थिर घर डेरा लाया। ना कोई मन्दर गुरूदवार, मस्जिद काअबा ना कोई रखवाया। मठ भठ ना कर त्यार, दर दरवाज़ा ना कोई खुलवाया। वेद पाठ ना कोई पुरान, गीता ज्ञान ना कोई जणाया। शरअ हदीस अञ्जील कुरान, मुसल्ला हत्थ ना कोई रखवाया। खाणी बाणी ना कोई ज्ञान, राग छतीस ना कोई अलाया। निरगुण रूप श्री भगवान, हरि आपणे विच्च समाया। निरगुण रूप अपर अपारा, आपे कल वरताईआ । आपे दीपक जोती कर उजिआरा, आप आपणा अन्धेर मिटाईआ। आपे सुहाए बंक दवारा, आप आपणा दर वखाईआ। आपे होए राओ रंक राज राजान शाह सुल्तान सिकदारा, तख्त ताज ना आप हंढ़ाईआ। आप होए बेऐब परवरदिगारा, आप आपणा नाअरा लाईआ। आप आपणा करे तन शिंगारा, बस्त्र आपणा तन हंढ़ाईआ। आप आपणा बणे मीत मुरारा, आप आपणा संग निभाईआ। आप आपणा करे बन्द किवाड़ा, आप आपणा रिहा खुलवाईआ। आप आपणा वेखे सच अखाड़ा, आप आपणा राग अलाईआ। आप आपणा सुहाए गढ़ अपर अपारा, उपर चढ़ आसण लाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़ ना बन्ने दस्तारा, कलगी तोड़ा

ना वेख वखाईआ। ना कोई घोड़ा ना कोई जोड़ा, दर दरबान ना कोई सहाईआ। सस्से उपर एका होड़ा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। साचे मन्दर आपे लाया पौड़ा, थिर घर बैठा सेज विछाईआ। दर दवारे आपणे आपे बौहड़ा, आप आपणा वेख वखाईआ। आपे होए मिट्ठा कौड़ा, रस रसीआ हरि रघुराईआ। आपे होए लंमा चौड़ा, आपणा लेखा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण विच्च समाईआ।

निरगुण नरायण नर हरि खेल अव्वला, आपणा आप कराया। थिर घर वसाए सच महल्ला, सच समग्री इक्क रखाया। दर दवार आपणा आपे मल्ला, आप आपणा वेख वखाया। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, अकल कला अखवाया। ना कोई दूई दवैती मेटे सल्ला, वरन बरन ना कोई जणाया। आपणी जोती आपे रला, आप आपणा दए उपाया। आपे फल्लया आपे फुला, आप आपणी फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। आप आपणा पाए मुल्ला, आप आपणा तोल तुलाया। आपे होए भुल अनभुला, अनभुल अनभुल आप अखवाया। आपे जाणे आपणी कुल्ला, कुलावन्त हरि रघुराया। आप आपणी प्रीती घोल घुला, आप आपणी सेव कमाया। आपे फल्लया आपे फुल्ला, आप आपणा दए उपाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण विच्च समाया।

निरगुण रूप आदि निरञ्जण, आदि पुरख अबिनाशा। आपे जाणे आपणा मज़न, आप आपणा दए भरवासा। आप आपणा होया सज्जण, आप आपणा दासी दासा। आप आपणा पड़दा आपे कज्जण, आपे पाए मण्डल रासा। आपणे ताल घर आपणे वज्जण, सुणे सुणाए शाहो शाबाशा। आप आपणी रक्खे लज्जण, गुणवन्त हरि गुणतासा। ना घड़या ना कदे भज्जण, मात गरभ ना होए वासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेखे खेल तमाशा ।

निरगुण रूप हरि अगम्म, आदि अन्त एकँकारा। ना मरे ना पए जम्म, निर्मल जोती जोत उजिआरा। आप सवारे आपणा कम्म, ना कोई मंगे होर सहारा। आपे जाणे आपणा दम, आपे देवे पवण हुलारा। आपे जाणे आपणा चंम, पंज तत्त ना कोई आकारा। आप आपणा बेड़ा बंन्ह, आप आपणा वेखे मंझधारा। आप आपणी वस्सया छपर छन्न, ना कोई मन्दर गुरूदवारा। निरगुण रूप तेरा खेल धन्न, थिर घर कोई ना लाया इट्टां गारा । ना कोई सूरज ना कोई चन्न, ना कोई चन्द सितारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल न्यारा।

निरगुण रूप हरि अकाल, आपणे रूप समाया। आपे दीना बंधप दीन दयाल, शाहो भूप अखवाया। आपे होए अनमुलड़ा लाल, आप आपणी गोद उठाया। आप आपणा लए भाल, आप आपणा बाहर कढाया। आप आपणा मार उछाल, आप आपणी बणत बणाया। आप आपणा होए दलाल, आप आपणी रचन रचाया । आप आपणा पाए जंजाल, तोड़नहार आप अखवाया। आपे शाह आपे कंगाल, धन धनवन्त आप हो जाया। आपे चले आपणे नाल, आप आपणा बैठा मुख छुपाया। आप आपणी करे संभाल, अठ्ठे पहर सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण विच्च समाया।

निरगुण रूप सति करतार, सति सति समाया। अठ्ठ सठ ना करे विचार, गंगा गोदावरी दिस

ना आया । पारब्रह्म पुरख अपार, आप आपणी धार चलाया। आप आपणी जाणे सार, सच सारथी आप अखवाया। आपे जाणे आपणी कार, करनहार हरि रघुराया। आपे बैठ सच तख्त सच्चे दरबार, आप आपणा हुक्म चलाया। आपे होए चोबदार, आपे शाहो भूप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप हरि निरँकार, निरगुण विच्च समाया।

निरगुण रूप हरि भगवन्ता, भेव ना कोई भेदया। आपे जाणे आदिन अन्ता, आप आपणी करे सेवया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, वड दाता देवी देवया। आप बणाए आपणी बणता, आपे खाए आपणा फल साचा मेवया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप ना कोई रसना ना कोई जिहवया।

निरगुण रूप हरि निधाना, आदि पुरख अखवाया। आप आपणा कर परवाना, आपणा घर सुहाया। आप आपणा बण मरदाना, परम पुरख आप हो जाया। आप आपणा करे खेल महाना, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण रूप उपाया।

निरगुण रूप सच तख्त सुल्तान, हरि साचा आप बराजया। आपे होए मेहरवान, आप आपणा रच्या काजया। आप आपणा वेखे मार ध्यान, ना कोई दूसर साजन साजया। ना कोई दीसे होर निशान, ना कोई मारे आवाज़या। इक्क इकल्ला हरि भगवान, आप आपणी रक्खे लज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा साजन साजया। आप आपणा साजन साज, हरि साचे रचन रचाईआ। आपे होया गरीब निवाज, आप आपणी दया कमाईआ। आदि शक्त प्रभ मारे आवाज़, आप आपणे अंग समाईआ। थिर घर रचया साचा काज, एका सेज सुहाईआ। पुरख अबिनाशी आप आपणा देवे ताज, सीस आपणे हत्थ रखवाईआ। एका शब्द सुत मार आवाज़, आप आपणा रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा अंग कटाईआ।

निरगुण आपणा आप उपा, शब्दी सुत उपाया। आप आपणा दए जणा, अबिनाशी अचुत आप अखवाया। आप आपणा राग अला, अनादी धुन उपजाया। ब्रह्मादी साची खोज खुजा, एका वंडन वंड वंडाया। आदि जुगादी झोली पा, साचा पल्ला आप फिराया। आपे दाता रिहा वरता, निखुट कदे ना जाया। उत्तम जाता इक्क रखा, पिता मात ना मोह वधाया। साची सिख्या इक्क सुणा, साचा सुत आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दित्ता वर, साचा घर आप सुहाया । (२३ मध्घर २०१४ बिक्रमी)

निरगुण शब्द निरगुण जोत, निरगुण निरगुण आप अखवाईआ। निरगुण मन्दर दवार किला कोट, निरगुण निरगुण बैठा आसण लाईआ । निरगुण नाम नगारा वज्जे चोट, निरगुण निरगुण रिहा सुणाईआ। निरगुण निरगुण उत्ते होए मोहत, मुहब्बत इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण करनी आप कमाईआ।

निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, शहनशाह निरगुण आप अखवाइंदा। निरगुण राज निरगुण राजान, भूपत भूप निरगुण आप हो जाइंदा। निरगुण भिखारी निरगुण देवणहारा दान, निरगुण झोली अग्गे डाहिंदा। निरगुण वस्त वस्त महान, निरगुण दस्त बदस्त देवे आण,

निरगुण आपणी धारा आप बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा।

निरगुण दर निरगुण दरवेश, निरगुण निरगुण अलख जगाईआ। निरगुण शाह निरगुण नरेश, नर नरायण निरगुण अखवाईआ। निरगुण सदा सदा रहे हमेश, निरगुण रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। निरगुण निरगुण करे आदेश, निरगुण निरगुण सीस झुकाईआ। निरगुण निरगुण लए वेख, निरगुण नेत्र नैण अक्ख ना कोई खुल्लाईआ। निरगुण वसे साचे देस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ।

निरगुण दयाल ठाकर स्वामी, निरवैर पुरख निरगुण अखवाइंदा । निरगुण आदि जुगादि सदा निहकामी, निरगुण निहचल धाम आसण लाइंदा। निरगुण सदा सदा अन्तरजामी, निरगुण दो जहानां वेख वखाइंदा। निरगुण बोध अगाध अगम्मी बाणी, निरगुण भेव अभेद खुलायंदा। निरगुण निरगुण खेल महानी, निरगुण ख़ालक आपणी कार कमाइंदा। निरगुण परवरदिगार नूर नूरानी, निरगुण लाशरीक अखवाइंदा। निरगुण मुकामे हक़ होए प्रधानी, निरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। निरगुण सचखण्ड वखाए आपणी सच निशानी, निरगुण सच निशाना आप झुलाइंदा। निरगुण महिमा गाए अकथ्थ कहाणी, निरगुण भेव कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी खेल आपणे हत्थ रखाइंदा। निरगुण दाता पुरख समरथ, निरगुण निराकार अखवाईआ। निरगुण चलावणहारा राथ, निरगुण खेवट खेट रूप वटाईआ। निरगुण निरगुण रक्खणहार हाथ, निरगुण बेपरवाह वड्डी वडयाईआ। निरगुण निरगुण पूरी करे आस, निरगुण आसा पूर आप हो जाईआ । निरगुण निरगुण देवे साथ, निरगुण सगला संग निभाईआ। निरगुण देवणहारा दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। निरगुण साहिब कमलापात, निरगुण नारी कन्त रूप वटाईआ। निरगुण वेखे खेल तमाश, निरगुण मण्डल रास रचाईआ। निरगुण धार बंधाए पृथ्मी आकाश, निरगुण रव सस सूरज चन्न करे रुशनाईआ। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव करे दास, निरगुण एका डोरी नाम तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ।

निरगुण निरगुण पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म, जीवण जुगत ना कोई जणाइंदा। सचखण्ड निवासी करे आपणा कम्म, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। निरगुण आपणा बेड़ा बंनू, निरगुण आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि मध एका धार चलाइंदा। निरगुण आदि पुरख आप, निरगुण अन्त आप अखवाईआ। निरगुण मध खेल तमाश, कोटन कोट जुग आपणा राह जणाईआ। निरगुण खेल वेल जुगादि, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। निरगुण लेखा जाण गुर अवतार, भगत भगवन्त साध साची साधना इक्क रखाईआ। निरगुण निरगुण शब्द अगम्म देवणहारा दाद, नाम निधान श्री भगवान इक्क जणाईआ। निरगुण वेखणहारा वाद विवाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, इक्क इकल्ला हरि अखवाइंदा। निरगुण दाता दीन दयाल, दीना नाथ वेस वटाइंदा। निरगुण सेवा लाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा थिर

घर आप प्रगटाइंदा। निरगुण हुक्मे अंदर हुक्म रखाए महांकाल, महिमां आपणी आप समझाइंदा। हुक्म अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी कल प्रगटाइंदा। निरगुण जोत निरगुण प्रकाश, निरगुण अन्ध अन्धेर मिटाईआ। निरगुण मण्डल निरगुण रास, गोपी काहन नचाईआ। निरगुण पृथ्मी निरगुण आकाश, निरगुण सूरज चन्द रुशनाईआ। निरगुण खेल निरगुण तमाश, खेलणहार आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण मेला निरगुण मेल मिलाईआ।

निरगुण नार निरगुण कन्त, सेज सुहञ्जणी निरगुण आप हंडाइंदा। निरगुण जोत निरगुण भगवन्त, निरगुण श्री भगवान नाउँ रखाइंदा। निरगुण पुरख अगम्म महिमां अगणत, निरगुण निराकार अजूनी रहित अनभव प्रकाश कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दवार खेल अपार, करे कराए करनेहार, करता पुरख आपणी वंड आपणे हत्थ रखाइंदा।

निरगुण वंड सरगुण रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। निरगुण दात निरगुण भिखारी मंगे मंग, सरगुण इक्को घर जणाईआ। तत्तव तत्त इक्क अनन्द, बंधन बंधप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल कराईआ।

निरगुण खेल अपार, सो पुरख निरञ्जण आप कराइंदा। त्रैगुण माया कर पसार, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यार, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। मन मत बुध कर शंगार, दर दवारा आप खुल्ह़ाइंदा। आसा तृसना भर भंडार, माया ममता हउमें नाल रलाइंदा। काया मन्दर कर पसार, डूंघी कंदर आसण लाइंदा। अनहद नाद शब्द धुनकार, अनरागी राग अलाइंदा। जोती जोत जोत उजिआर, नूर नूराना डगमगाइंदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता साची रीता आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी सरगुण निरगुण संग लाए प्रीता, निरगुण प्रेम प्यार इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण इक्को भेव खुल्ह़ाइंदा।

निरगुण खोल्ह़े भेव, अभेद आप हो जाईआ। आदि पुरख सदा निहकेव, निहचल आपणा आसण लाईआ। नाम जणाए रसना जिहव, पवण स्वास समाईआ। अगम्म अथाह अलक्ख अभेव, बेअन्त वड वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए वडयाईआ।

सरगुण नाता पंज तत्त, निरगुण जोत रुशनाईआ। निरगुण देवे ब्रह्म मत, पारब्रह्म पढ़ाईआ। सरगुण निरगुण होए वस, दोए जोड़ सरनाईआ। जगत जीवण चले रथ, रथवाही बेपरवाहीआ। शब्द अनादी वजाए नद, अगम्मी धार वखाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, पारब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। निझर देवे इक्को रस, अमृत झिरना आप झिराईआ । सति सतिवादी साचा राह दस्स, दह दिशा खोज खुजाईआ। महिमां जणाए अकथ्थना अकथ्थ, कातब लिख लिख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आदि निरगुण जुगादि निरगुण जुग जुग वंड वंडाईआ।

जुग जुग सरगुण धार, निरगुण आप चलाइंदा। लक्ख चुरासी कर पसार, घट घट डेरा लाइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी कार आप कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, ब्रह्म आपणा मेल मिलाइंदा। नाउँ धर गुर अवतार, गुर गुर शब्दी राग अलाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोल्ह किवाड़, दो जहानां हट्ट चलाइंदा । लेखा जाण सच्ची सरकार, शहनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी रच संसार, खाणी बाणी मेल मिलाइंदा। धुर फ़रमाना देवे निरँकार, शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान आप दृढ़ांइंदा। अञ्जील कुरान दए आधार, शब्दी धार वेस वटाइंदा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण कर उजिआर, महांसारथी आपणा रथ चलाइंदा। सच संदेसा वारो वार, जुग चौकड़ी आप सुणाइंदा। सिफ्ती सिफ्त भरे भंडार, गुर अवतार रसना जिह्वा गाइंदा। पीर पैगम्बर करन गुफ्तार, कलमा नबी रसूल समझाइंदा। भगत भगवान दरस दिखाल, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा । सन्त सुहेले रक्खे नाल, सहज सुभाउ मेल मिलाइंदा। गुरमुखां अन्तर आत्म कर पछाण, परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। गुरसिखां लग्गी निभे नाल, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग आप सिखाल, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा ।

निरगुण सरगुण पढ़ाए बोध, अगाध वड्डी वडयाईआ। निरवैर निरँकार सार समाल हिरदा सोध, हरि जू आपणा रंग वखाईआ। भाग लगाए काया माटी कोट, शब्द चोट इक्क जणाईआ। निराली प्रकाश कर जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ । निरवैर खोल्ह सोत, सुरती शब्दी आप मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग सरगुण देवे पंज तत्त वडयाईआ।

सरगुण पंज तत्त वड्डिआ, लोकमात दया कमाइंदा। गुर अवतार मार्ग ला, पीर पैगम्बर सिफ्त सलाह जणाइंदा। कोटन कोट नाम धरा, रसना जिह्वा सर्ब पढ़ाइंदा। आप छुपया रहे बेपरवाह, नेत्र नज़र किते ना आइंदा। चार जुग भविख्त भविख्त भविख्ती गिआ जणा, भाखिआ आपणी आप जणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण गवाह, शहादत इक्को नाम पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच निशाना गए जणा, लिखया लेख ना कोई मिटाइंदा। कलिजुग अन्तम आवे बेपरवाह, पड़दा आपणा आप उठाइंदा। कल कलकी जामा पा, निहकलंका डंक वजाइंदा। शब्द अगम्मी चोट लगा, दो जहानां आप उठाइंदा। सम्बल आपणा डेरा ला, चाउ घनेरा इक्क रखवाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी घेरा पा, सत्तां दीपां वंड वंडाइंदा। कूड़ी क्रिया डेरा ढाह, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत वेखे थाउँ थां, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। दो जहानां जणाए इक्को नां, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग दे विछड़े लए मिला, पूरब लेखा सर्ब वखाइंदा। दीन मज़हब ज़ात पात नेत्र नैणां नाल दरसा, शब्द इशारा इक्क कराइंदा। सरगुण भुलया बेपरवाह, पारब्रह्म नज़र किसे ना आइंदा। पढ़ पढ़ विद्या श्री भगवान गए भुल्ला, भुल्लयां मार्ग ना कोई पवाइंदा। अञ्जील कुरान वेद पुरानां झगड़ा पया थां थां, खाणी बाणी वंड ना कोई वंडाइंदा। निरगुण दाता नेत्र नैण वेखे इक्क ध्यान, पड़दा उहला लाहिंदा। मुकामे हक़ हो रोशना, रोशन ज़मीर इक्क कराइंदा । तहकीक करे आप खुदा, खुदी सभ दी वेख वखाइंदा। चौदां तबकां पड़दा आप उठा, मुख नक़ाब ना कोई रखवाइंदा। रहबर बण दो

जहान, निरवैर आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता निरवैर आपणी कार कराइंदा।

निरवैर आए पुरख अकाल, अकल कला वडयाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। चारे वरनां हो दयाल, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश अंग लगाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहनशाह इक्को घर वसाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, निरगुण आत्म निरगुण परमात्म निरगुण मन निरगुण बुद्धी निरगुण मत लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

निरगुण अंस सरगुण बंस सरबंसा वेख वखाइंदा। निरगुण मणीआं निरगुण मंत, सरगुण मंत्र आप पढ़ाइंदा। निरगुण नार निरगुण कन्त, सरगुण काया चोली सेज हंडाइंदा। निरगुण महिमा निरगुण अगणत, सरगुण रसना जिह्वा गाइंदा। निरगुण गढ़ सरगुण हउमें हंगत, माया ममता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण आप उठाइंदा।

निरगुण पारब्रह्म, ब्रह्म निरगुण आप जगाईआ। निरगुण करे साचा कर्म, निहकर्मी वड वडयाईआ। निरगुण आदि जुगादी इक्को धर्म, वरन गोत ना कोई रखवाईआ। निरगुण निरवैर इक्को रक्खे सरन, शिवदवाला मट्ठ मन्दर मसजद गुरूदवार ना कोई जणाईआ। निरगुण निरवैर इक्को जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोई रखवाईआ। निरगुण घट घट अंदर रक्खे वास, घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी इक्को नर, नर नरायण वड्डी वडयाईआ।

निरगुण नर निरगुण नार, निरगुण पूत सपूत बणाइंदा। निरगुण भूशन निरगुण शंगार, निरगुण वेस अनेक वटाइंदा। निरगुण नाद शब्द धुनकार, निरगुण लिख लिख लेख जगत जणाइंदा। निरगुण शास्त्र सिमरत वेद पुरान कर उजिआर, निरगुण खाणी बाणी वंड वंडाइंदा। निरगुण सभ दा लेखा करे आर पार, बेपरवाह आपणे विच्च छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त शब्द शब्दी इक्को मंत, मंत्र इक्को इक्क जणाइंदा।

निरगुण मंत आदि सो, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ। निरगुण हँ ब्रह्म हो, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। दोहां विचोला भेव ना जाणे को, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा बीज आपे बो, पत्त डाली आप महकाईआ। अन्तम मालण बण के आपे लए खोह, कली कली लक्ख चुरासी आप तुड़ाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले भगत भगवान साची लड़ी लए परो, नाम तन्द हत्थ उठाईआ। साचा नाम दृढ़ाए सोहँ सो, आदि अन्त मध आपणी धार जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपे हो, ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण करे पढ़ाईआ।

हं ब्रह्म निरगुण याद, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। सो पुरख निरञ्जण सुण फरयाद, सति सतिवादी फेरा पाइंदा। मेल मिलावा माधव माध, मोहण मोहणी आपणा रंग वखाइंदा। देवणहारा धुरदरगाही दाद, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। रक्खणहारा साच लाज, सिर आपणा हत्थ रखवाइंदा। वक्त सुहञ्जणा करे काज, आदि निरञ्जण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण वंड खेल ब्रह्मण्ड, हरि शब्द अगम्मी साचा छन्द, दो जहानां आप अलाइंदा।

दो जहानां निरगुण धार, हरि शब्द शब्द जणाईआ। सतिजुग सति सति वरतार, सति सतिवादी आप वरताईआ। सति सति दए आधार, ब्रह्म मत इक्क जणाईआ । रत्ती रत्त कर खुआर, चोली अगम्मड़े रंग रंगाईआ। गढ़ झूठ हँकार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाईआ । सच सच कर प्यार, सुरती शब्द दए मिलाईआ। गुरमुख हरिजन दए उधार, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। साचे सन्तन खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। भगतन मेला धुर दरबार, धुर दरबारा इक्क वखाईआ। साचे मन्दर दए बहाल, चौथ्थे पद मिले वडयाईआ । चौथ्थे पद आप संभाल, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। थिर घर वखा सच्ची धर्मसाल, शब्द शब्दी विच्च समाईआ। जोती जोत कर प्यार, थिर घर पन्ध आप मुकाईआ। सचखण्ड देवे सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे सोभा पाईआ। निरगुण निरगुण लै के जाए नाल, गुरमुख आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण रूप पुरख अबिनाशी जन भगतां रक्खे उत्तम ज़ात, आत्म जोड़े साचा नात, जोती जोत मिलाईआ।

निरगुण मेला निरगुण जोत, जोती जोत मिलाइंदा। निरगुण गुरू निरगुण चेला निरगुण वसे साचे कोट, मन्दर साचा सोभा पाइंदा। निरगुण खेल पिता पूत, सपूत आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्को काहन, वेखणहारा दो जहान, वसणहारा सच मकान, सचखण्ड निवास पुरख अबिनाशी अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह दाता दानी बेपरवाह, जन भगतां बणे आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा।

निरगुण बेड़ा चुके कंध, कंध आपणे भार उठाईआ। संग सुहेला हरि बख्शंद, बख्शश आप कराईआ । दो जहानां मेट पन्ध, पान्धी आपणा चरन उठाईआ । गीत सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला इक्क जणाईआ। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, निझ आत्म करे रसाईआ । सच दरवाज़ा जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ । सचखण्ड दा सिँघासण सोहे पलँघ, पावा चूल ना कोई वडयाईआ। शब्द राग ना कोई मरदंग, नाद धुन ना कोई शनवाईआ। निरगुण रूप सदा सर्बंग, परम पुरख बैठा आसण लाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा रक्खण संग, विछोड़ा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण विछोड़ा निरगुण मेला निरगुण सरगुण आपणे घर मिलाईआ।

निहकामी : कलिजुग प्रगटिओ आप निहकामी। सर्ब का करता सर्ब का स्वामी। (२ भादरों २००७ बि)

निरगुण निरवैर सदा निहकामी, निहकर्मी वड वडयाईआ। शब्दी शब्द बणया बानी, दाता दानी सहज सुखदाईआ। (१३ भादरों २०१७ बि) (कामना रहित)

निहकर्मी : निहकर्मी करे आपणा कर्म, पुरख अकाल दया कमाईआ। सतिजुग साचा एको

धर्म, धर्म आत्मा दए दृढ़ाईआ । दूई द्वैती मेट के भरम, भाण्डा भरम दए भन्नाईआ। काया माटी झगड़ा चुकाके चर्म, चम्म दृष्टी दए गुआईआ। लहणा मुका के वरन बरन, सरन इक्को इक्क वखाईआ। मार्ग दस्से तरनी तरन, हरि चरन मिले वडयाईआ। सन्त सुहेले आवे फड़न, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। साचा ढोला दस्से पढ़न, सृष्ट सबाई इक्को ज्ञान दृढ़ाईआ। सच्चे पौड़े दस्से चढ़न, मंज़ल इक्को नज़री आईआ । सच दवारे दस्से वड़न, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। लेख चुकावे मरन डरन, जन्म कर्म भउ रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

निहकर्मी करे आपणा कम्म, हरि करता वड वडयाईआ। मानस जन्म वेखे भगत जन, सन्त सुहेले खोज खुजाईआ। गुरमुखां कहे धन्न धन्न, जो हरि हरि नाम घ्याईआ। गुरसिखां बेड़ा देवे बन्नृ, खेवट खेटा हो के होए सहाईआ। एका राग सुणाए कन्न, साची सिख्या दए समझाईआ। नाम पदार्थ दे के धन, दौलत इक्को झोली पाईआ । पंच विकारा देवे डंन, डंका शब्द सुणाईआ। मन का मणका फेर के मन, ममता मोह मिटाईआ। कर प्रकाश काया माटी तन, तत्तव साचा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

निहकर्मी करे आपणा खेल, हरि वड्डा वड वडयाईआ। सन्त सुहेले लए मेल, गुरमुख रंग रंगाईआ। लेखा जाणे गुरू गुर चेल, चेला गुर समझाईआ। दीनां दा सज्जण इक्क सुहेल, पारब्रह्म सच्चा शहनशाहीआ। सच दवारे बैठा रहे नवेल, अलख अगोचर आपणा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त करे खेल, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। कट्टणहारा राए धर्म दी जेलृ, जम की फांसी दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण इक्क अखवाईआ।

निहकर्मी करे आपणी करनी, करता वड वडयाईआ। सच दरसाए इक्को सरनी, परम पुरख चरन ध्यान जणाईआ। जोती जोत जगे घर घरनी, गृह मन्दर करे रुशनाईआ। साची विद्या दस्से पढ़नी, पंडत पांधे लोड़ रहे ना राईआ। साची मंज़ल दस्से चढ़नी, औखी घाटी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाईआ। निहकर्मी खेल करे हरि सति, सति दए समझाईआ। अन्तर उपजाए ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या दए पढ़ाईआ। झोली पा के धर्म हक़, हकूक देवे थाउँ थाईंआ। दूर दुराडा आवे नड्ड, नेरन नेरा नज़री आईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्स, इक्को वार समझाईआ। गुरमुख गुर गुर कर वस, गुरसिख वेखे चाईं चाईंआ। सर्ब जीआं आत्म परमात्म गाउँणा जस, सोहँ ढोला गए सुणाईआ। जागत सोवत खुलृे अक्ख, इष्टी दृष्टी बेपरवाहीआ। लेखा जाणे पुरख समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

निहकर्मी जाणे मित गत, घर घर खोज खुजाइंदा। देवणहारा धीरज यत, सति सन्तोख आप दृढ़ांइंदा। रक्खणहारा सिर हत्थ, मेहर नज़र उठाइंदा। वेखणहारा तत्त अठ, नौ दवारे खोज खुजाइंदा। वसणहारा भगतां साथ, सगला संग निभाइंदा। पढ़ावणहारा इक्को गाथ, आत्म परमात्म नाम दिड़्हाइंदा। चलावणहारा सच्चा राथ, रथवाही हो के सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाइंदा।

निहकर्मी मेटे कोटन पाप, पत्तित पुनीत कराईआ। सर्ब जीआं दा माई बाप, पिता पुरख

अखवाईआ। नाम पदार्थ दे के दात, सृष्ट दए समझाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, रैण भिन्नड़ी सोभा पाईआ। निर्मल कर पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर धूंआंधार रहण ना पाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेले घर घर दास, गुरसिख गुर गुर गोद उठाईआ। अन्तर आत्म पूरी करके ख़ाहिश, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। लेखे लावे पवण स्वास, साह साह देवे वडयाईआ। दाता वड गुणतास, गहर गम्भीर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक्क वखाईआ।

निहकर्मी सुणावे धुर दा ढोला, सच्चा राग अलाईआ। शब्द सरूपी होए विचोला, सोई सुरती दए उठाईआ। भेव चुकाए पड़दा उहला, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। लाल गुलाला खेले होला, रंगण रंग इक्क जणाईआ। पंच विकार ना पाए रौला, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक्को इक्क जणाईआ।

निहकर्मी कर्म कांड देवे तज, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। जूठी झूठी पार करके हद्द, घर मन्दर सोभा पाईआ। आत्म सेजा चढ़े भज्ज, गुरमुख लए जगाईआ। शब्द अनादी वजाए नद, अगम्मी राग सुणाईआ। सच सिँघासण बहे सज, सोहणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दर खुशी वखाईआ।

निहकर्मी करे सच प्रीत, प्रीतीवान इक्क अखवाइंदा। सोहँ ढोला सुणावे गीत, गायत्री मंत्र लेखे पाइंदा। त्रै भवण धनी बैठ अतीत, त्रैगुण डेरा आपे ढाइंदा। लेखा जाण ऊँच नीच, हस्त कीट वेख वखाइंदा। जन भगतां अंदर लँघ दहलीज़, साचे मन्दर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा।

निहकर्मी साचे मन्दर वड़दा, निरगुण आपणा कदम उठाईआ। महल्ल अट्टल अगम्मे चढ़दा, सच दवारे सोभा पाईआ। सुरती शब्दी खेल करदा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। साचा राग इक्को पड़दा, तूं ही तूं सुणाईआ। गुरमुख करके साचा बरदा, बन्दीख़ाने दए तुड़ाईआ। लेखा जाणे घर घर दा, काया मन्दर वेखे चाईं चाईंआ। रूप धर नरायण नर दा, निहकर्मी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। निहकर्मी करे आपणा काज, कज्जल नैण भगतां पाईआ। दो जहानां चरनां हेठां रक्खे राज, लक्ख चुरासी रईअत वेख वखाईआ। वस्त अमोलक दे के दात, शब्द भंडारे दए भराईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। चार वरन पढ़ाए गाथ, मंत्र इक्को इक्क समझाईआ। बण वणजारा खोले हाट, सौदा साचा हट विकाईआ। आत्म परमात्म जोड़ के नात, धुनी राग सुणाईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, घर घर सोभा पाईआ। खेले खेल बहु बिध भांत, भावी भावना आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए जगाईआ।

निहकर्मी जाणे आपणा जोग, जुगती साचे घर वसाइंदा। कलिजुग कट्ट हउमे रोग, हँ ब्रह्म दृढ़ांइंदा। भेव चुकावे चौदां लोक, सच सलोक इक्क समझाइंदा। कूड़ी क्रिया कढ़ु के खोट, खोटे खरे आप मिलाइंदा। अन्त मिलाए आपणी जोत, हरिजन जोती जोत समाइंदा । सति वखाए किल्ला कोट, भगत दवारा इक्को सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हत्थ रखवाइंदा। निहकर्मी करे आपणा कारज, करता दए वडयाईआ ।

पिछला लेखा करके सभ दा खारज, अगला ख़र्चा दए बंधाईआ। दो जहानां लै के चारज, गुर अवतारां पल्लू दए छुडाईआ। सच सच दी लिख इबारत, कूड़ कूड़ गवाईआ। हरिजनां करे आप सफारश, आपे लए छुडाईआ। दो जहानां सच्ची अदालत, पुरख अकाल दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

निहकर्मी भउ चुकावे दूजा, एका एकँकार नज़री आईआ। साची दस्से अगम्मी पूजा, सिल पाहन सीस ना कोई निवाईआ। भेव खुल्ह़ावे गूझा, गुझी रमज़ लगाईआ। लेखा जाणे बुत्त रूह दा, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

निहकर्मी पूरी करे ख़ाहिस, ख़ाहिस आपणे नाल मिलाईआ। जन्म जन्म दयां विछड़यां पूरी करे आस, तृस्ना जगत बुझाईआ। स्वामी हो के वसे पास, सदा सुहेला इक्को माहीआ। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, धरनी धरत देवे वडयाईआ। मिल सख़ीआं पावे रास, गोपी काहन रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग हिस्सा हिस्सेदारां रिहा वरताईआ। (६ अस्सू २०२१ बिक्रमी इन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला)

निहकर्मी प्रभ मार्ग देवे सच्चा, सच सच सर्ब जणाईआ। भाण्डा रहे कोई ना कच्चा, जिस जन जोती अगनी दए तपाईआ। कंचन सोना बणे छोटा बच्चा, पारस आपणा नाम छुहाईआ। प्रेम प्रीती अंदर फिरे नस्सा, भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अकाल गावे जसा, हिरदे हरि वसाईआ। दर्शन पावे नेत्र अक्खां, पड़दा घर खुल्ह़ाईआ। निउँ निउँ हरि जगदीश टेके मथ्था, टिक्का धूढ़ी खाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। निहकर्मी कहे सति सतिवाद, विवाद मेट मिटाईआ। काया खेड़ा कर आबाद, घर बूटा नाम सति लगाईआ। दीपक जोत जगा चिराग, सच करे रुशनाईआ। सच करे रुशनाईआ। झगड़ा चुकाए पूजा पाठ नमाज, नाम इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन उठाए इक्क आवाज़, आलस निंदरा दए गवाईआ।

निहकर्मी मारे इक्क कूक, गुरमुख गुरसिख आप उठाईआ। कूड़ी क्रिया देवे फूक, फ़िकरा सच पढ़ाईआ। तृष्ना मेटे भूख, हउमे रोग चुकाईआ। घर आत्म दे सुख, दलिद्दर देवे गवाईआ। उजल करके मुख, सिफ्तां नाल सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वडयाईआ।

निहकर्मी देवे जन वड्डिआई, हरि करता खेल खिलाइंदा। घर विच्च वज्जे सद शहनाई, सोहणा राग अलाइंदा। अन्तर आत्म कट्ट जुदाई, धुर दा मेल मिलाइंदा। जलवा वखा नूर खुदाई, नूरो नूर डगमगाइंदा। साढ़े तिन्न हत्थ होवे रुशनाई, दीवा बत्ती इक्को नज़री आइंदा। किरपा करे हरि गुसाईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर बहाइंदा। निहकर्मी दस्से घर अव्वला, हरि करता वड वडयाईआ। जिथ्थे वसे आप इकल्ला, सोहणा आसण लाईआ। दीवा बत्ती इक्को बला, जोत करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए आपणा पल्ला, सुरती डोरी शब्द बंधाईआ। लक्ख चुरासी नाल करके वल छल्ला, हरिजन साचे वेख वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्ह़ां अंदर निरगुण जोत हो के

रला, तिन्नां जगत रलयां बाहर कढ्ढाईआ। (६ अस्सू २०२१ बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला)

निहकर्मी बख्शे साची टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाइंदा। मन बुध करे बिबेक, बिबेकी रूप वखाइंदा। अन्तर आत्म दस्से भेत, भेव आप खुल्लाइंदा। निज नेत्र लए वेख, अक्ख प्रतक्ख आप प्रगटाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख बणाके नेक, निक्के वड्डे जोड़ जुड़ाइंदा। लभ्भदे फिरदे कोटन कोट केत, जंगल जूह उजाड़ हत्थ किसे ना आइंदा। कोटन कोट रण भूमी सुत्ते खेत, बन्द बन्द धड़ सीस कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा।

निहकरमी देवे धुर दा रंग, रंगीला इक्क अखवाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सोहणी बणत बणाईआ। शब्द अनाद वजा मरदंग, धुर दा राग सुणाईआ। मेघ वसा प्रेम गंग, लहर लहर नाल टकराईआ। सच स्वामी दे के आनंद, आनंद अनन्द विच्चों जणाईआ। भरमां कूड़ी ढाहके कंध, झगड़ा दए गवाईआ। सदा सुहेला बण के संग, धुरदा संग रखवाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे मंग, गुरमुख मांगत ना कोई तरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शे इक्क शरनाईआ।

निहकर्मी देवे धुर दा नाम, करे सच पढ़ाईआ। मेल मिलावे विछड़े राम, रौणक घर वखाईआ। प्रेम प्रीती प्याए जाम, नाम खुमार चढ़ाईआ। भाग लगाके काया ग्राम, खेड़ा दए वसाईआ। आसण सिँघासण उत्ते गुरमुख सुआए बा-आराम, रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक वेख वखाईआ।

निहकर्मी चुकाए अगला पन्ध, पिच्छा रहण ना कोई पाईआ। दीन दयाल हो बख्शंद, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सति प्रेम दी दे सुगंध, घर खुशीआं नाल बठाईआ। कूड़ी क्रिया बाहर कढाके गंद, पत्तित पुनीत रूप वटाईआ। अमृत धार वहाके सागर सिंध, शुद्ध अन्तर दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहणा झोली पाईआ।

निहकर्मी देवे आपणी वस्त, धुर दी दात वरताईआ। नाम खुमारी चाढ़े मस्त, हस्ती दए बदलाईआ। निज नेत्र आत्म परमात्म दरस, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। कर्म कर्म दी मेट के हरस, भर्म भर्म दा रोग गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर्दी दर्द वंडाईआ।

निहकर्मी दस्से आपणा बोल, अनबोलत राग अलाईआ। परम पुरख दा वज्जे ढोल, दो जहानां रिहा सुणाईआ। सच दवारा इक्को खोल्ल, राओ रंकां इक्को घर बहाईआ। अमृत आत्म दे के पहुल, पिछला लेखा दए चुकाईआ। सांतक सति कराए गुरमुख अडोल, काया डोली विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा रिहा मुकाईआ।

निहकर्मी वेखे काया डोली, पंज तत्त खोज खुजाइंदा। जिन्नां सुणाए आपणी बोली, सो गुरमुख ढोला गाइंदा। मेल मिलावे हौली हौली, हलका भार सर्ब वखाइंदा। सच प्रीती जिन्नां घोल घोली, तिन्नां लेखा आपणे हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।

निहकर्मी होवे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुखां देवे धुर दा दान, वस्त आपणी झोली पाईआ। नज़री आवे बणके काहन, बंसरी नाम सुणाईआ। एथ्थे ओथ्थे करे पहचान, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। राजयां घर कदे ना बणया महिमान, ग़रीबां घर जुग जुग फेरा पाईआ। एहो परम पुरख दा सच निशान, जो लोकमात रिहा झुलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लाए बाल अंञाण, सुघड़ सिआणे आप बणाईआ। (६ अस्सू २०२१ बिक्रमी बुढ्ढा सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला)

निहकर्मी सूरा सर्बंग, सो पुरख निरञ्जण आप अखवाइंदा। वेखणहारा ब्रह्मण्ड खण्ड, हरि पुरख निरञ्जण खेल खिलाइंदा। भेव चुकावणहारा जेरज अंड, एकँकार पड़दा लाहिंदा। लक्ख चुरासी चमकावणहारा नूरी चन्द, आदि निरञ्जण डगमगाइंदा। दीन दयाल सर्ब बख्शंद, अबिनाशी करता इक्क हो जाइंदा। अन्तर आत्म देवणहारा अनन्द, श्री भगवान वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जन्म कर्म दा मेटणहारा पन्ध, पारब्रह्म सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सति सतिवादी चाढ़नहारा रंग, गुर शब्दी वेस वटाइंदा। आत्म देवणहारा साचा छन्द, धुर दा ढोला राग सुणाइंदा। सेज सुहञ्जणी बैठ पलँघ, घर ठांडे सोभा पाइंदा। नाता तोड़ के ख़ाना बन्द, बन्द खुलासी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आपणे हत्थ रखाइंदा।

निहकर्मी सदा सूरबीर, सुल्तान इक्क अखवाईआ। दो जहानां पैंडा चीर, लोकमात सोभा पाईआ। शब्द निराला मार तीर, सुत्ते लए उठाईआ। जुग चौकड़ी पिछली मेटणहारा लकीर, आपणा मार्ग अग्गे दए समझाईआ। सय्यदे कर दे गए पीर फ़कीर, पैगम्बर मंगण झोली डाहीआ। करे खेल सदा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सभ दी आपणे हत्थ रक्ख तक़दीर, दूजा कोई ताकत वाला सके ना मात उलटाईआ। जन भगतां गलों शरअ शरीअत लाह के ज़ंजीर, कूड़ा बंधन दए गवाईआ। अमृत बख्श के ठांडा नीर, अगनी तत्त बुझाईआ। दे वड्डिआई पंज तत्त शरीर, सरीर मन दए समझाईआ। मंज़ल चोटी चाढ़ अख़ीर, आख़र आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

निहकरमी उच्च अथाह, अगम्म अगोचर इक्क अखवाइंदा। आदि जुगादी बणे मलाह, जुग जुग बेड़ा कंध उठाइंदा। गुर अवतारां दए सलाह, पीर पैगम्बरां आप पढ़ाइंदा। नईआ नौका नाम चला, सन्त सुहेले विच्च बहाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेस वटा, कलिजुग आपणी कार कमाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोत कर रुशना, दीवा बाती इक्को डगमगाइंदा। घर विच्च घर मन्दर दए सुहा, सोभावन्त आपणा आसण लाइंदा। पूरब जन्म दा पिछला लहणा कर्म दा रोग दए मिटा, धुर संजोगी अगला मेल मिलाइंदा। अमृत आत्म रस अगम्मी चोग दए चुगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ स्वामी दया कमाइंदा।

निहकरमी बोध अगाध, अकल कला वडयाईआ। जुग चौकड़ी साजण साज, नित नवित्त वेख वखाईआ। नव नौं चार थापण थाप, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दस्सणहारा जाप, गुर अवतारां करे पढ़ाईआ। एथ्थे ओथ्थे सदा सदा सद इक्क

इकेला आपे पाक, दूजा पाकीज़ा रूप ना कोई वखाईआ। धर्म दवारा खोल़ के धुर दा ताक, तख़ता दुनी दए उलटाईआ। सभ नूं अंदरों कर के चाक, चक्कर आपणा दए भवाईआ। लेखा जाणे शाह नवाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

निहकरमी वड वड्डा बलवान, बलधारी इक्क अखवाइंदा। जिस दा झुलदा सचखण्ड निशान, दो जहानां वेख वखाइंदा। सो साहिब किरपा करे महान, मेहरवान आपणा फेरा पाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों कर पहचान, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। नाम निधाना दे के दान, दानी दया आपणे हत्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच समग्री इक्क वरताइंदा।

निहकरमी देवे धुर दा होका, हुक्म इक्क सुणाईआ। कलिजुग अन्तम प्रभ मिलण दा मिल्या मौका, बिन दमां जोड़ जुड़ाईआ। इस तों होर नहीं कोई मार्ग सौखा, जो घर ठाकर दए मिलाईआ। अन्त मिला के आपणी जोता, जोती जोत समाईआ। गुरमुख मंगे थोड़ा, प्रभ देवणहारा बहुता, वस्त अनमुलड़ी आप वरताईआ। सुरैण सिँघ अग्गे हिक़णा पया फेर ना खोता, सचखण्ड दवारे मिली माण वडयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हाज़र हज़ूर सदा खलोता, आलस निंदरा ग़फ्लत विच्च कदे ना आईआ। (६ अस्सू २०२१ बिक्रमी सुरैण सिँघ गृह बंडाला)

निहकरमी होए पुरख अकाल, अकल कल धारी दया कमाइंदा। गुरमुख वेखे आपणे लाल, गुर गुर गोद उठाइंदा। नाता तोड़ काल महांकाल, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। त्रैगुण माया मेट जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाइंदा। सभ तों श्रेष्ट काया मन्दर सच्ची धर्मसाल, जिस घर हरि स्वामी डेरा लाइंदा। जिस नूं कदे ना खाए काल, जन्म मरन विच्च ना फेरा पाइंदा। तिस स्वामी कर भाल, जो भुल्लयां भटकयां राहे लाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, ऊँचां नीचां गोद उठाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों कर बहाल, चारे खाणी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप खुल़ाइंदा। निहकरमी निरगुण निरवैर निर्मल जोत, जोती जाता हरि अखवाइंदा । वसणहारा सचखण्ड साचे कोट, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जन भगतां नित नवित्त दरस करन नूं आपे रिहा लोच, आसा गुरमुखां नाल रलाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों कर के खोज, अन्तम आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। निहकरमी हरि पुरख बिधाता, बदला जुग जुग रिहा चुकाईआ। सर्ब जीआं बण पिता माता, गोदी गोद सुहाईआ। एथ्थे ओथ्थे होवे राखा, रक्खया करे थाउँ थाईंआ। जिस दी काग़ज़ां उत्ते लिखी गाथा, निमाज़ां विच्च सय्यदे रहे झुकाईआ। सो खेले खेल पुरख समराथा, समरथ आपणा फेरा पाईआ। गुरमुख विरले लोकमात जाता, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। सृष्ट वखाए सृष्ट तमाशा, सृष्टी सृष्टी विच्च भवाईआ। जन भगतां वक्खरा रक्खया सभ तों नाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर मेला रिहा मिलाईआ। निहकर्मी हरि वड गुणवन्ता, गुण भरपूर अखवाईआ। माण दवा के साचे सन्तां, सतिगुर लए तराईआ। सति धर्म दी बणा के बणता, घाड़त धुर दी लए घड़ाईआ। दे के ज्ञान

शब्दी पंडता, बोध दए जणाईआ। मेल मिलाए साची संगता, घर साचे दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे शहनशाहीआ।
निहकर्मी हरि शाह पातशाह, परवरदिगार अखवाइंदा। फड़ फड़ बाहों राहे रिहा पा, रहबर इक्क हो आइंदा। खुदी तक्बर दए गवा, खुदा ख़ालस रूप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हत्थ वखाइंदा।
निहकरमी रिहा हस्स, हसती आपणी मात प्रगटाईआ। दो जहानां दे के वथ, वस्तू रिहा वरताईआ। निरगुण सरगुण मेल के झट्ट, झगड़ा रिहा चुकाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्ट, गुरमुख वणजारे रिहा कराईआ। सति धर्म दी दे के मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। श्री भगवान दा गौणा सच्चा जस, जिस नूं वेद पुरान सालाहीआ। उह सभ दा माई बाप, पिता पुरख अकाल अखवाईआ। जिस दा सोहँ इक्को जाप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुरसिख गुरमुख गुर सतिगुर रंग रंगाईआ। (६ अस्सू २०२१ बिक्रमी तरलोक सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला)

निहकर्मी हरि सच्चा सज्जण, मालक दो जहान अखवाइंदा। चरन धूड़ कराए मज़न, अन्तर आत्म मैल धुआइंदा। लेखे ला के काया माटी कंचन, करता कीमत आप चुकाइंदा। मन वासना देवे बदल, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा।
निहकर्मी सतिगुर देवे मंत्र, शब्द नाम पढ़ाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, गृह गृह खोज खुजाईआ। भेव खुल्हावे ब्रह्म निरंतर, माया पर्दा दए चुकाईआ। कर प्रकाश घर गगनंतर, गगन मण्डल करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझा बसन्तर, अमृत मेघ बरसाईआ। मेल मिला के साचे सन्तन, साची सुरती दए खुल्हाईआ। जोड़ जुड़ाके धुर दे कन्तन, दुहागण लेखा दए मुकाईआ । पार करा के जगत पत्तण, कन्ढा इक्को इक्क समझाईआ। जिस दा मालक पुरख समरथन, शहनशाह इक्क अखवाईआ। जिस दी महिमा शास्त्र सिमरत वेद पुरान गुर अवतार पैगम्बर कथन, कथनी नाल सुणाईआ। सो सदा सहायक धुर दा नायक हरि ख़ालक मार्ग आया दस्सण, रहबर राह जणाईआ। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ जड़ आया पुट्टण, सति धर्म बूटा दए लगाईआ। जन भगतां सुणाए अनोखे बचन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।
निहकर्मी हरि परम प्यारा, परम पुरख अखवाइंदा। लेखा जाणे सदा जुग चारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। वरन बरन तों वसे बाहरा, जोती जाता डगमगाइंदा। कागत कलम ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद अन्त किसे ना आइंदा। खेले खेल गुप्त ज़ाहरा, नित नवित्त आपणा फेरा पाइंदा। जन भगतां देवे सच सहारा, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। काया मन्दर खोल्ह किवाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। दीआ बाती कर उजिआरा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। अमृत बूंद स्वांती ठंडा ठारा, घर झिरना आप झिराइंदा। सति सतिवादी बोल जैकारा, धुंन रागी राग अलाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, लोचण नैण अक्ख खुल्हाइंदा । भगत जनां जन पाए सारा, जगत जुगीशर आपणी दया कमाइंदा । जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा।

निहकर्मी हरि धुर दा मालक, बेपरवाह अखवाइंदा। लेखा जाणे मख़लूक ख़ालक, लोक परलोक पड़दा लाहिंदा। सच स्वामी धुर दा सालस, सति दवारे बह बह खुशी मनाइंदा। लक्ख चुरासी बण प्रितपालक, पालणा सभ दी आप जणाइंदा। गुरमुख वेखे बाले बालक, बचपन आपणे विच्चों प्रगटाइंदा। जन्म कर्म दा मेट के आलस, निंदरा कूड़ गवाइंदा। सन्त सुहेले विरोले ख़ालस, ख़ास आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तां विच्च समाइंदा।

निहकर्मी हरि सन्त समाया, वज्जे सच वधाईआ। जगत नेत्र नज़र ना आया, निज अक्ख करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया डेरा ढाया, पंचम देवे नाम वडयाईआ। सच संदेसा इक्क सुणाया, धुर दा राग अलाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ जुड़ाया, जगत विछोड़ा रहण ना पाईआ। सस्से उपर होड़ा लाया, हँ ब्रह्म वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर बणत रिहा बणाईआ। निहकर्मी बणत बणाए मात, धुर दा घाड़न रिहा घड़ाईआ। गुरमुख बणा के सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। इक्को वार बेनन्ती सुण अरदास, अंदरे अंदर अदला बदली दिती कराईआ। जगत तृष्ना मिटाई खाहिस, विष्न ब्रह्मा शिव सीस ना कोई निवाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण सतिगुर पूरा सदा वसे पास, जगत विछोड़ा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

निहकर्मी खेल अनडिठा, सो पुरख निरञ्जण आप कराइंदा। जन भगतां अमृत दे के रस मिट्ठा, कूड़ी क्रिया परे हटाइंदा। सच दवारे सच स्वामी दिसा, दह दिशा वंड वंडाइंदा। वड्डयां नालों वड्डा निकयां नालों निक्का, मध आपणी धार चलाइंदा। आदि जुगादी बण के धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर वेख वखाइंदा। जिन्ह़ां नूं भुल्ल गिआ पिछला पिच्छा, तिन्ह़ां नूं सुरती शब्द जणाइंदा। जिस ने मात गर्भ कीती रच्छा, सो मालक अन्तम लेखे लाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत उसे दा सच्चा बच्चा, जो अग्गे बच्चआं वांग गोद उठाइंदा। किसे कम्म नहीं औणा काया माटी भाण्डा कच्चा, बिन सतिगुर पूरे आत्म परमात्म जोड़ ना कोई जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे अंग लगाइंदा। निहकरमी लाए आपणे अंग, अंगीकार अखवाईआ। गुरमुखां नौ दवारे वेखे पार लँघ, मंज़ल पन्ध चुकाईआ। दसम दवारी अगम्मा अनोखा पलँघ, बिन पावे चूल टिकाईआ। दिवस रैण वज्जे मरदंग, अनरागी राग अलाईआ। सुरती शब्दी मिल के गावे छन्द, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। ओथ्थे होए बेनन्ती ना बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोई वडयाईआ। लोड़ रहे ना सूरज चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। तीर्थ जाणा पए ना गोदावरी गंग, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। घर स्वामी देवे अनन्द, परमानंद दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दए बुझाईआ।

निहकरमी जन भगत करे मंज़ूर, मंज़ल सभ दी वेख वखाईआ। उहदा जलवा उत्ते कोहतूर, मूसा नैण शरमाईआ। उह चढ़दे वेखे सूली मनसूर, शमस बैठा खल्ल लुहाईआ। उसने गौंदे वेखे ज़रूर, कबीर जुलाहे जहे रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए हाज़र हज़ूर, हाज़री सभ दी लेखे पाईआ।

निहकर्मी कहे मेरा शब्द तुरंग, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। दो जहानां आपे जाए पार लँघ, अद्धविचकार ना कोई अटकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सचखण्ड जन भगतां पूरी करां मंग, मनसा सभ दी झोली पाइंदा। जिनां कलिजुग अन्त श्री भगवन्त ढोला गाया सोहँ छन्द, सो पुरख निरञ्जण निज नेत्र नैण अक्ख दरस वखाइंदा। दीन दयाल सर्ब स्वामी हो बख्शंद, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणे नाल मिलाइंदा। (६ अस्सू २०२१ बिक्रमी वधावा सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला)

निहकर्मी कहे सुणो जन भगत, अन्तम भावना पूर कराईआ। नाता तोड़ के कूड़े जगत, जगमग जोत करां रुशनाईआ। आपणे नाम दा दस्सके अरथ, अरथात सभ नूं दित्ता जणाईआ। पिछला करके पूरा वाक, वक्त वेला रिहा सुहाईआ। तुहाढ़े नाल मिला के आपणी ज़ात, ज़ाहर करां रुशनाईआ। खेलां खेल बहु बिध भांत, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होया सहाईआ।

जन भगतो सुणो इक्क संदेस, सदा हरि जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो के पेश, पेशीनगोई रहे जणाईआ। सभ तों अगला अख़ीरी साड्डा पूरा होया लेख, लिख्त दित्ती चुकाईआ। तूं साहिब करके जोती भेस, भेख पाखण्ड दे गवाईआ। जन भगतां लए पेख, आपणे नैण मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। निहकरमी कहे जन भगत प्यारे, भगती इक्क कमाईआ। सोहँ शब्द सच जैकारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै जैकार सुणाईआ। इस तों कुछ नहीं होर बाहरे, ब्रह्मण्ड खण्ड इसे विच्च बन्द कराईआ। खाणी बाणी एसे दे पनिहारे, जुग जुग सेव कमाईआ। गुर अवतार एसे दे वणजारे, लोकमात हट्ट चलाईआ । जिनां उपर आप किरपा धारे, धरनी धवल उत्ते वेख वखाईआ। तिनां दे माणस जन्म गए सवारे, बग बप्पड़ा रहण कोई ना पाईआ। सो गुरमुख मिले हँसां डारे, कागी काग ना कोई कुरलाईआ। सभ दी मंज़ूर करे निमस्कारे, बन्दना आपणी झोली पाईआ। अन्तम बहावे ओस मुनारे, जिस दी मंज़ल बेपरवाहीआ। अग्गे हो मिले निरँकारे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। लै के जाए सच दरबारे, दरगाह साची धाम सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बहुतआं विचों थोड़े कीते प्यारे, थोड़या विच्चों थोड़े जोड़ जुड़ाईआ। (६ अस्सू २०२१ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला)

निरञ्जण : सोहँ सो पुरख निरञ्जण। दीन दयाल सदा दुःख भंजन। महाराज शेर सिँघ त्रिलोकी नंदन। (१७ मघ्घर २००६ बि) ❋
जोत निरञ्जण जगत में आई। कलिजुग विच्च किसे भेद ना पाई । विच्च त्रेता राम रघुराई। विच्च द्वापर कृष्न घनघाई। होया महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई। (८ फग्गण २००६ बि)

निंदा : मेरा नाम बेमुख ना सुणे कोई। निन्दकां दुष्टां दी दुरमत होई। निन्दया जिन्नां ने मेरी कीती। परेत जून उन्नां दी कीती। जिस ने मेरा माण है कीता। पीआ अमृत सदा है जीता। (१४ भादरेंग२००६ बि)

जो जन निन्दया सतिगुर दी करे। नरक कुण्ड में सदा ही जले। कुंभी वास नरक दुःख भरे। धर्म राए दा डण्ड सिर परे। काल की मुंगली मारां सिरे। जून घोगढ़ विष्ट उह पड़े। जिस मुख नाल निन्दिआ करे। विष्टा विच्च चुंझ उह धरे। जन्मे मरे मरे मर जन्मे। सतिगुर किरपा मिले ना सरने। (१५ मध्घर २००६ बि)

मानस जन्म लै जिस सतिगुर निन्दया, सतिजुग पार प्रभ करे अग्गे चले जीव ना बिन्दया। निमस्कार चरन लाग जो करे, पावे फल जो मन चिंदिआ। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे बेमुख खपावे, वगाए उल्टी सिंध्धया। (२६ फग्गण २००७ बि)

चुगली निन्दया जगत बखीली, जो कोई आत्म लावे तीली, आत्म रत्त प्रभ साचे पी ली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया खाली करे पतीली। (१३ जेठ २०१० बि)

गुरसिख सुखी वसंदिओ, हरि नाम सदा घ्याओ। घर साचे थान बहंदयो, चरन कँवल प्रीत रखाओ। बेमुख करदे फिरन जो निन्दया, कन्नी सुण खुशी मनाओ। प्रभ आप मुकाए आत्म अन्नया, ना किसे दे मत आप समझाओ। ना कोई मनावे मंनिआं, ना तुसीं सानूं वड्डिआओ। जिस घड़आ तिस भंनया , रक्खे थाईं थांउं। प्रभ अद्धविचकार बध्धा बन्नया, दूजा कोई लागे रक्ख ना पाओ। जो घड़आ सो भंनयां, नीवें हो फल साचा खाओ। प्रभ होए गुरसिख तेरे दर दा पाली जिउँ माल चराए धंनया, प्रभ वेखो हरि हरि थांउं। (१५ मध्घर २०१० बि)

गुर पूरा हरि गोबिन्द, हरि हरि आप अखवाया। मेट मिटाए सगली चिन्द, चिन्ता रोग रहण ना पाया। दाता दानी गुणी गहिंद, जुग जुग आप अखवाया। सर्ब जीआं आपे बख़शिंद, बख्शणहार आप रघुराया। मनमुख जीव लगाए आपणी निंद, निन्दक निन्दया मुख धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाया। (२० फग्गण २०१४ बिक्रमी)

हरिसंगत सेवा साचा मूल, अनमुल आप जणाइंदा। प्रेम प्यार दे बरखो फूल, दूजी मंग ना कोई मंगाइंदा। कूड़ी क्रिया कांटा चुभौणी ना कोई त्रिसूल, त्रैगुण सूल आप जणाइंदा। गुरसिख गुरसिख दी चुग़ली निन्दया ना करनी भूल, सच सुच्च झोली पाइंदा । प्रभ मिलण दा इक्को असूल, गुरसिख असलीयत रूप वटाइंदा। जो सतिगुर बचन करे कबूल, सो गुरसिख हरि संगत सेव कमाइंदा। सतिगुर लहणा देणा चुकावे मूल, अगला पिछला लेखा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत दी सॅच प्रीती, प्रेम प्यार दी इक्को रीती, जीवण जुगत दी सच्ची नीती, इक्को रंग वेखणा हस्त कीटी, ऊँच नीच भेव ना कोई रखाइंदा। (११ फग्गण २०१६ बि)

सतिगुर चरन मिले गोबिन्द, ठाकर इक्को नज़री आईआ। गुरसिख मिटे कूड़ी चिन्द, चिन्ता चिखा रहण कोई ना पाईआ। अमृत धार वहे सागर सिंध, हरिजन सज्जण तारीआं लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मनमुख करदे सदा निंद, निन्दया निन्दक झोली पाईआ ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।

साची सिख्या सतिगुर सज्जण, हरि करता आप जणाईआ। चरन धूढ़ी प्रभ करो मज़न, दुरमत मैल रहण ना पाईआ। दूजे दर ना जाओ लभ्भण, घर घर विच्च वसे बेपरवाहीआ। नित नवित्त जन भगतां आवे सद्दण, अंदर वड़ के होका देवे वाहो दाहीआ। रूप धराए अकाल मूरती मदन, मोहण माधव आपणी खेल कराईआ। दीपक जोती निरगुण जगण, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अनहद अनादी नाद ताल वज्जण, शब्द धुन सच्ची शनवाईआ। गुरमुख अमृत पी पी रज्जण, सतिगुर नाम प्याला हत्थ फड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कूड़ कुड़िआरे मच्चण, त्रैगुण अगनी इक्क लगाईआ। पंच विकारे अंदर नच्चण, डौरू डंका जूठ झूठ वजाईआ। माया ममता नाल हस्सण, आसा तृष्ना नाल रखाईआ। गुरमुख विरले प्रभ सरनाई साची वसण, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। सच दुआरे उठ उठ नट्ठण, भज्जण वाहो दाहीआ। लक्ख चुरासी विच्चों सतिगुर छाछ वरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। मेहरवान हो के जगत किनारा वेखे पत्तण, दरया कन्ढ्डा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। (६ अस्सू २०२० बि)

सतिगुर चरन मिले गोबिन्द, ठाकर इक्को नज़री आईआ । गुरसिख मिटे कूड़ी चिन्द, चिन्ता चिखा रहण कोई ना पाईआ। अमृत धार वहे सागर सिंध, हरिजन सज्जण तारीआं लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मनमुख करदे सदा निंद, निन्दया निन्दक झोली पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।

साची सिख्या सतिगुर सज्जण, हरि करता आप जणाईआ। चरन धूढ़ी प्रभ करो मज़न, दुरमत मैल रहण ना पाईआ। दूजे दर ना जाओ लभ्भण, घर घर विच्च वसे बेपरवाहीआ। नित नवित्त जन भगतां आवे सद्दण, अंदर वड़ के होका देवे वाहो दाहीआ। रूप धराए अकाल मूरती मदन, मोहण माधव आपणी खेल कराईआ। दीपक जोती निरगुण जगण, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अनहद अनादी नाद ताल वज्जण, शब्द धुन सच्ची शनवाईआ। गुरमुख अमृत पी पी रज्जण, सतिगुर नाम प्याला हत्थ फड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कूड़ कुड़िआरे मच्चण, त्रैगुण अगनी इक्क लगाईआ। पंच विकारे अंदर नच्चण, डौरू डंका जूठ झूठ वजाईआ। माया ममता नाल हस्सण, आसा तृष्ना नाल रखाईआ। गुरमुख विरले प्रभ सरनाई साची वसण, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। सच दुआरे उठ उठ नट्ठण, भज्जण वाहो दाहीआ। लक्ख चुरासी विच्चों सतिगुर छाछ वरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। मेहरवान हो के जगत किनारा वेखे पत्तण, दरया कन्ढ्डा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। (१२ अस्सू २०२० बि)

जन भगत मालक साचे घर दा, धिरना विच्च कदे ना आईआ। जित्थे इक्को दीपक जगदा, जग्गा जग्गा ना कोई रुशनाईआ। पुरख अकाल सच सिँघासण सजदा, सोभावन्त डेरा लाईआ। हुक्म सुनेहड़ा जुग जुग घलदा, फ़रमाना आप उपाईआ। लक्ख चुरासी चोली रंगदा, तन

माटी कर सफ़ाईआ। जन भगतां सच बेनन्ती मन्नदा, सुणनहार गुसाईंआ। कदे कच्चा ना होवे कन्न दा, चुगली निन्दया सुणन कोई ना पाईआ। प्यारा बणे साचे जन दा, जो जन्म प्रभ दी झोली पाईआ। पूरा लेखा करे पवण स्वास दम दा, दामन आपणा दए फड़ाईआ। लेखा रहे ना कोई मन दा, मनसा मोह कूड़ दए चुकाईआ। कर प्रकाश साचे चन्न दा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। भेव खुल्ला के हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म आपणे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा सद साचे घर टिकाईआ। (१४ जेठ श सं २)

सम्मत पंज कहे प्रभ ने राम दे अंदर दित्ता हलूणा, तिन्न वार हिलाईआ। राम ने राम तैनूं रक्खया ऊणा, बिना राम तों राम पूरन नज़र कोई ना आईआ। तेरा रसना जिह्वा नाल कूणा, जगत वाली सिखलाईआ। मेरा खेल सिल अलूणा, बिना किरपा तों चट्टण वाला ना कोई अखवाईआ। जिस वेले त्रेते तों बाद द्वापर कुकर्म होवे दूणा, कूड़ी क्रिया वज्जे वधाईआ। द्वापर तों कलिजुग सति धर्म दा रहे कोई ना धूणा, साधू सिध ना कोई वखाईआ। सतिगुर दी निन्दया गुरसिख करन मूंहना, राम दी राम दुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। (१४ जेठ श सं ५)

प्रगटे आप प्रभ दहिंदा। सचखण्ड करे जो प्रभ निंदा। बेमुख हरे आपणी बिन्दा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग सच शब्द लिखंदा। (२६ फग्गण २००७ बि)

किरपा करे गोबिन्द गोबिन्दा। वड वड राजन सुरप्त राजे इन्दा। भगत जनां हरि हरि सद बख़शिंदा। आप तुड़ाए आत्म अन्तम जिंदा। बेमुखां लक्ख चुरासी विच्च फिराए, जो दर आए करन निंदा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सागर सिंधा। (१७ चेत २०१० बि)

इक इकल्ला हरि गोबिन्दा, अकल कला समाया। गुरमुख उपाए साची बिन्दा, आप आपणी दया कमाया। अंदर मन्दर बजर कपाटी तोड़े जिंदा, एका खण्डा हत्थ उठाया। मनमुख जीव आप लगाए आपणी निंदा, मुख निन्दया इक्क रखाया। जन भगतां अमृत धार वहाए सागर सिंधा, सर सरोवर इक्क वखाया। प्रगट होए नर हरि हरि वड मरगिंदा, जोधा सूरबीर आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, एका शब्द साचा नाउँ आप चलाए अगम्म अथाहो, बेपरवाह फेरा पाया। (२ मध्घर २०१४ बि)

एका इसम हरि करतार, उसत्त निंदा ना कोई वडयाईआ। काया जिस्म ना कोई विचार, तन माटी ख़ाक ना कोई वडयाईआ । जोत नूर अगम्मी धार, ज़हूर जलवा हरि रुशनाईआ। शब्द नाद धुंन जैकार, एका हुक्म सच्ची शनवाईआ। सच पैगम्बर करे ख़बरदार, सच कलमा इक्क जणाईआ। आयत शरायत रखाए परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका करे कर्म पढ़ाईआ। (१६ हाढ़ २०१८ बि)

लोहड़ी कहे मैं सारे वेखे मंगते, मंगे जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी गए लँघदे, समां समें विच्चों बदलाईआ। मैं खेल वेखदी रही ओस अनन्द दे, जो अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दर तों सारे गए मंगदे, गुर अवतार पैगम्बर झोलीआं डाहीआ। उह लोहड़ी प्रभू एहनां

भगतां वंड दे, जिन्नां तेरी आस रखाईआ। जे पिच्छे विछड़े ते अग्गे गंढु दे, नाता सके ना कोई तुड़ाईआ। शौह दरया जगत विच्चों बेड़ा बन्नु दे, फड़ आपणे कंध उठाईआ। जेहड़े तैनूं भगवन करके मन्नदे, उन्नां आपणा रंग रंगाईआ। सच प्रेम दा साचा धन दे, मन मनसा कूड़ गवाईआ। फिक्के बोल ना सुणीए कन्न दे, चुगली निन्दया ना कोई चतुराईआ। जे किरपा करें ते दर्शन करीए गोबिन्द तेरे चन्न दे, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जेहड़े कूड़े नाते तन दे, जगत जाईए तजाईआ। अंदरों लेखे मुका दे ग़म दे, चिन्ता चिखा बाहर कढ़ाईआ। मेल मिला लै हँ ब्रह्म दे, पारब्रह्म आपणे विच्च मिलाईआ। जन भगत जुग चौकड़ी जदों जम्मदे, जम्म के मंगते तेरे अग्गे झोली डाहीआ। सच बख्शीश आपणा रूप ब्रह्म दे, पारब्रह्म सरनाईआ। लेखे रहण ना जन्म कर्म दे, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। भुलेखे कढ़ु दे अंदरों भरम दे, हउमे हंगता रहे ना राईआ। आपणे घर विच्च आपणा जरम दे, जन भगतां भुल्ल जावे जम्मण वाली माईआ। सदा पुजारी रहण तेरे चरन दे, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। भय चुका दे डरन मरन दे, चुरासी गेड़ कटाईआ। तेरे हो के तेरे ढोले पढ़नगे, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरनाई सरन दे, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। (२६ पोह श सं ५)

चौवी जेठ कहे क्यों आए अलड़पिण्डी, अलड़ जवाना दे दरसाईआ। गोबिन्द कहे औह चौवी जेठ जेहड़ी गुरमुखां दी संगत अजे खिण्डी, उह अग्गे लैणी मिलाईआ। सभ दे मस्तक सुहाग दी लौणी बिन्दी, कन्त कन्तूहल लैणा प्रभ हंढ़ाईआ। झगड़ा रहण नहीं देणा एशीआ यूरप हिंदी, नव सत वेख वखाईआ। धुर दे नाम वजौणी किंगी, मरदंग शब्द लैणा उठाईआ। पूजा रहण नहीं देणी लिंगी, शिव झगड़ा रहे ना राईआ। जेहड़ी सृष्टी प्रभ नूं रही निंदी, निन्दया विच्च समाईआ। उन्नां दी किसे कम्म नहीं औणी जिंदी, राए धर्म दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ। (२४ जेठ श सं ६)

अवतार पैगम्बर गुर कहण साड्डा ब्यान होवे कलम बन्द, बन्दश अवर ना कोई रखाईआ। असीं सचखण्ड दवारिउँ मार के आए पन्ध, पान्धी बण के भज्जे वाहो दाहीआ। साड्डे बोलण वाले नहीं ज़बान ते दन्द, तेरा हुक्म शब्द शनवाईआ। अज्ज तों असीं दीन मज़हब दा झगड़ा छड्डया ते करना नहीं जंग, लड़ाई तेरे हत्थ फड़ाईआ। पंजां लिखारीआं दे रूबरू साड्डा हो जाए तेरे नाल कारज अनन्द, अनन्द तेरे विच्चों आईआ। तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद दस गुरू सारे कट्ठे हो के गाईए इक्को छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ते दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिध्धर वेखीए तूं साड्डा नूर ते असीं तेरे चन्द, चन्द नूर तेरा रुशनाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे अग्गे साड्डी सभ दी एहो मंग, साड्डी झोली देणी भराईआ। जेहड़ा नाम कलमा सानूं तूं पिच्छे दित्ता वंड, तेरयां भगतां दे साहमणे तेरयां कदमां विच्च सुटाईआ। असीं चौहन्दे अग्गे सारी सृष्टी नूं चाढ़ दे इक्को रंग, इक्को इष्ट देणा वखाईआ। तेरे चरनां दी धूड़ अठ्ठ सट्ठ तीर्थ ते उत्तम श्रेष्ट चंग, जिथ्थे विष्न ब्रह्मा शिव नहा नहा खुशी मनाईआ। असीं पिण्डे तों हो जाईए नंग, तेरे अग्गे दुहाईआ। कोई मार ना सकीए दम, दामनगीर

तेरी इक्क सरनाईआ। क्यों हुण असीं छड्डदे झगड़ा माटी ते चंम, तेरी जोत विच्च तेरा रूप समाईआ। ना कोई ख़ुशी ते ना कोई ग़म, चिन्ता रही ना राईआ। ना कोई भेख करीए ना कम्म, ना डौरू डंक खड़काईआ। जो घड़या सो देवीं साहिब तूं भन्न, भन्नणहार सभ किछ तेरे हत्थ फड़ाईआ । इक्क बेनन्ती ज़रूर मातलोक विच्च आपणयां भगतां दा बन्नी मन, मनसा बाहर ना कोई हलकाईआ। वेखी चुगली वाले रहण ना देवीं किसे दे कन्न, गुरसिख दी निन्दया गुरसिख ना कोई सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहण असीं दस्स के आए बिना सतिगुरू दे नाम तों चंगा नहीं जे कोई धन, उह धन देणा वरताईआ। क्यों कलिजुग चोर डाकू बथेरे ते लावण वाले संन, साध सन्त एहो चोरी रहे कमाईआ। प्रभू कोई स्त्री बणदा कोई नार बणदा कोई वाईफ असीं बण गए तेरी उह रंन, जेहड़ी शर्म हया विच्च आपणा आप तेरे विच्च छुपाईआ। हुण किरपा कर के सभ दा बेड़ा लवीं बन्नु, तेरा तेरी झोली दित्ता सुटाईआ। जेहड़ा तेरे चरन झुक जाए उहनूं कोई सके ना डंन, चुरासी दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। (१७ हाढ़ श सं ६)

फुल्ल कहण असीं भगतां उत्ते लाउणी बरखा, प्रभ दित्ती माण वडयाईआ। गुरसिखो याद कर लउ सिख नूं सिख तरसदा मर गिआ विच्च सरसा, सिख नाल सिख सक्कया ना कोई मिलाईआ। उस नूं कोई बहुता नहीं बितया अरसा, थोड़ा समां रिहा जणाईआ । हुण वी तुहाढ्ढे उत्ते पैण वाला पर्चा, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ । जन भगतो तुहाढ्ढे विच्च निन्दया वाली होवे कदे ना चर्चा, जो निन्दक होवे उस नूं बाहर कढ्ढ के दिउ वखाईआ। क्यों तुहाढ्ढा मालक वाली अर्शा, अर्शी प्रीतम नूर इल्लाहीआ। जिस दा सम्मत शहनशाही सत्त दा बरसा, जन भगतो घर घर गुरमुखां बरसी रिहा मनाईआ। भगत दवारा धाम अगम्मा उपर धरता, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। (२६ जेठ श सं ७)

* * * * *